मीनायण

[मीना जाति का अनुपम ग्रन्थ]

लेखक—रचयिता

श्रीमौक्तिकराम दर्भ (परमारमारण क्षत्रिय)

सीमल खेड़ी

प्रकाशक :

श्रीसीताराम शरण

सीमल खेड़ी

पो. सोजपुर

जि. झालावाड़ (राज.)

प्रकाशक :—

* श्री सीताराम शरण
सीमल खेड़ी
पो. सोजपुर
जि. झालावाड़ (राज.)

* प्रथम संस्करण
१००० प्रतियाँ
श्रीगुरुपूर्णिमा २०४० सम्वत्

* न्यौछावर
१२) बारह रुपये

* मुद्रक
श्रीहरिनाम प्रेस, हरिनाम पथ, वृन्दावन

—ः समर्पण ः—

मीना क्षत्रिय जाति के मूल कारण भगवान् मीनेश !
आपकी ही प्रेरणासे एकदिन इस 'मीनायण' ग्रन्थ
के लिखने का सूत्रपात हुआ था। आज यह
आपकी महती अनुकम्पा से समाप्त
होकर आपकी ही प्रेरणासे आप
ही के श्रीचरणकमलों में
सादर समर्पित
होता है।

—मौक्तिक

प्राक्कथन

उन सच्चिदानंद परात्परब्रह्म गुणातीत अखिल ब्रह्मांडों के स्वामी सर्वशक्तिमान अज अव्यक्त परमात्मा मीनेश को कोटिशः धन्यवाद है; कि जिनकी कृपा से आज यह परमपवित्र मीनायण ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

न तो मैं कवि हूं और न मुझे कविता करना आता है; फिर कविता करना साधारण काम भी नहीं है। किसीके बनने या बनाने से भी कोई कवि नहीं हो जाता कवि तो जन्म से कवि ही होता है। यह बात दूसरी है कि मीनेश प्रेरणा तथा कुछ समय के अनवरत अभ्याससे सोई हुई काव्यप्रतिभा; संभव है प्रबुद्ध हो जाय। मैं तो यहां किसी भी लायक नहीं हूं।

नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहीं पास में दाम।

फिर भी मीनायण जैसे ग्रन्थ के लिखने की धृष्टता कर बैठा हूं। सो भी झूलने नामक छन्द में। आशा है काव्यबुध-विद्वज्जनों से मेरी यह अनधिकार चेष्टा क्षम्य होगी। तथा इस ग्रन्थ को वे अपना ही समझ कर इसकी त्रुटियों को निकाल देंगे या दास को सूचित करेंगे। अस्तु !

अब आप कहेंगे कि जब मीनाक्षत्रिय जातिका मुख उज्ज्वल करने वाले मीनाक्षत्रिय जातिके परमाचार्य मुनिमग्नसागर महाराजने अमरभाषामें श्लोक बद्ध हिन्दी व्याख्या सहित परमविशुद्ध 'मीनपुराण' तथा कोमल मति मीनक्षत्रियों के प्रीत्यर्थ मीनपुराण भूमिका निर्माण कर प्रकाशित कर दी थी तब 'मीनायण' की क्या आवश्यकता थी अच्छा सुनिये—

सभी का इतिहास संगीत में अवलोकन कर मुझे भी मीना क्षत्रिय चरित्र संगीत उल्था 'अनुवाद' करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न

मीनायण के रचयिता

श्रीमौक्तिकराम जी दर्भ

निवासी—सीमलखेड़ी

हुई। मैं मीनेश भगवान् की प्रेरणा उपलब्ध कर तथा दत्त चित्त से उसे अपने टूटे-फूटे शब्दों में तर्ज राधेश्याम (झूलने में) में लिखने ही नहीं लगा प्रत्युत हरेनुकम्पया सांगोपांग लिख ही गया। कारण कि—

गान कलासे हीन हिय समुझहु ऊसर ताहि।
प्रेम विटप कैसे उगै, उगे तहूँ जारि जाहिं॥

अथच—

श्लोक—साहित्य-सङ्गीत कला विहोनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः

अर्थात् जो मनुष्य संगीत साहित्य की कला से हीन है वह साक्षात् बिना सींग-पूँछ का पशु ही है। ऐसा महात्मा भर्तृहरि जी ने अपने शतकत्रय में कहा है। फिर बात यह भी है कि श्रेष्ठ गद्य के पढ़ने सुनने में तो दिल सुशिक्षित विद्वानों का ही लगता है। किंतु संगीत अर्थात गाना चाहे वह कितनाही क्लिष्ट दुर्बोध्य अन्य भाषा का या अश्लील, श्लील हो; यदि वह शुद्धतापूर्वक तालसुर साजके साथ गाया जाय; तो शीघ्र ही वहाँ बालक, युवक, वृद्ध, समझ अनसमझ सभी की भीड़ लग जाती है। कोई समझते नहीं तो भी उसे सुनते अवश्य हैं। और जब तक वह पूरा नहीं हो जाता लोग वहाँ से नहीं हटते हैं। न उनको जंभाई तथा तंद्रा ही आती है। आप देखते हैं कि बड़े बड़े अधिवेशनों तथा संमेलनों में लाउडस्पीकर अपने उदात्तस्वर के मन मोहक गानों से हजारों की संख्या में जंता की भीड़ ही इकट्ठी कर लेता है; देखी आपने संगीत की असीम ताकत और आकर्षण शक्ति।

वह इसीलिये मैंने मीनाक्षत्रिय चरित्र (मीनायण) कथा—स्वरूप संगीत में लिखा है। यदि कोई श्रेष्ठ कथक्कड़ (पंडित) मीनायण के साज (बाजा तबला) के सहित स्वरताल मिलाकर कहेगा तो श्रोताओं को राधेश्याम रामायण जैसा आनंद इसमें भी उपलब्ध अवश्य होगा।

मत्कृत मीनायण ग्रन्थ मीनक्षत्रियों का सर्वस्व तो है ही अतिरिक्त इसके यह सर्व साधारण के भी मनन श्रवण करने योग्य है। क्योंकि इसमें जगह-जगह पर विशेष कर शिक्षा कांड में पारमार्थिक विषय का भी समावेश किया गया है।

आशा है मारण क्षत्रिय तथा मारण महिलायें इस ग्रन्थ का सादर पठन श्रवण करके लेखक के अथक परिश्रम को सफल कर दासको अनुगृहीत करेंगे।

मौक्तिकरामदर्भ

सम्माननीय वन्धुओं मुझे मीना क्षत्रिय गोत्र संग्रह में जो श्रीमान् बाबूरामसिंहजीने संकलन कर छपवाया था वो भी जयपुर नि. श्री गुलाबचन्द्रजी गोठवाल साहव प्रदान कर इस ग्रन्थ को और सुन्दर बनवा दिया है इसमें मीनाओं के ५२०० गोत्र भी पीछे जोड़दिए हैं।

धन्यवाद

सीतारामशरण निवासी
सीमलखेड़ी, पो. सोजपुर
झालावाड़ (राजस्थान)

मीनस्य अन्वयं मीना

मैं उन मत्स्यावतार मीनस्य अन्वयं मीना महापुरुष के श्री चरणों की वन्दना करता हूं, जो कि समस्त मीना जाति के मूल उत्पन्नकर्त्ता हैं। साथ ही श्री १००८ श्री मुनि मग्नसागर महाराज जू के वन्दऊं गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नर रूप हरि।

हम समस्त भारत की मीना जाति महाराज जू के आभारी हैं, जिन्होंने मीनपुराण भूमिका नामक मीना जातिकी उत्पत्ति, स्थिति, लय, एक अति सूक्ष्म पुस्तिका का सृजन कर हमें गौरवान्वित किया है, उन्हीं की चक्रलीक ग्रहण करके मेरे अग्रज श्री मौक्तिकराम जी सीमल खेड़ी, जिन्होंने मीनायण काव्य अति सुन्दर ग्रन्थ का सृजन कर हमें और भी जागृत कर सत्पथ का अनुगामी बनाया है। लेकिन अप्रकाशित ग्रन्थ होने से उसका प्रसार होना असम्भव सा ही रहा, जब कि समय-समय पर मीना जाति के विद्वानों द्वारा प्रकाशित कराने की प्रेरणा मिलती रही। श्रीभगवान्सिंहजी, श्रीभीमसिंहजी, श्री बादल जी, श्री लालाराम जी प्रमुख मास्टर साहब श्री मांगी लालजी आदि व्यक्तियों ने प्रेरणा दी। परन्तु–आर्थिक अभाव के कारण यह ग्रन्थ प्रकाशित न हो सका।

मीना समाज सामूहिक विवाह समारोह डोबड़ी तथा श्रीश्री कृष्ण जी कम्पोउण्डर साहब साटोला एवं अन्य समस्त आर्थिक सहयोगी महानुभावों का मैं आभार प्रदर्शित करता हूं।

नहीं जाति स्नेह, नहीं पितु मातु का आदर।
नहीं भ्रात से प्रेम, जानु नर ते चिमगादर॥
परहित भावी जे पुरुष, उनका जन्म महान्।
उनके द्वारा होता है, पतन जाति उत्थान॥

पतन जाति उत्थान सहारा गिरते जनका।
सदा रहत खुशहाल सबल परिवार है उनका ॥
कहे प्रह्लाद विचार कही यह बात चतुर नर ।
उनका जीवन धन्य जिन्हें गौरव है जाति पर ॥

भवदीय

प्रह्लाद पटेल

घघरावता

भूल-सुधार

प्रूफ की भूल से निम्न स्थानों पर दो विशिष्ट अशुद्धियां रह गयी हैं। पाठक गण उन्हें सुधारकर ही पाठ करें।

(१) पृष्ठ ४ पर १६ वीं पक्ति के बाद निम्न २ पंक्तियां जोड़ लें
कतिपय कुरीतियां अश्रितकर, मारण तुम इतने बिगरे हो।
मैंना मीना मैंना मीना क्षत्रिय होकर भी मोटे बकरे हो ॥

(२) पृष्ठ ६२ पर तीसरी पंक्ति के बाद निम्न १ पंक्ति जोड़ लें-
पितरोंका आवाहन पूजन, करते सब कटि पर्यन्त जल में।

★

मीनायण की विषयानुक्रमणिका

प्रथम वारातसोपान—पृष्ठ

वंदना श्लोक संस्कृत में	१
प्रार्थना मारणकुलप्राण	२
मंगलाचरण दोहा	३
मीणो असभ्यता त्यागो	४
हम मोटेवकरे क्यों दृष्टान्त	४
दृष्टान्त का तत्व	६
विवाहगीत वनाजी थांछो हरिकीजात	६
बनाजो थांछो सिंह सपूत	१०
वनी तू सीख हिए धरेज	१०
थेंतो सूधो मारग चोलारी म्हारी चतुर वनी	११
थांतो बिद्यापढ़वो सीखोजी म्हारा चतुर वनां	१२
रघुवरजी को लाड लडावां	१२
मीनेश आबाहन प्रार्थना	१३
उत्पत्ति सोपान	
श्लोक मीनपुराण के	१४
मीनेश प्रार्थना	१४
मुनि मग्नसागरजी उखलाना की वंदना	१५
हम मीना क्यों कहलाए	१५
मी तथा ना की व्याख्या	१६
मीनेश्वर महिमा	१६
विष्णु के मुकुट की मणि से मैंनपुरुष की उत्पत्ति	१७
मीनाक्षत्रिय जाति के लिए आर्शे मुनि का कथन	१८
शिवपार्वती संवाद	१९
मैंन नर को शिवजी का वरदान	२०
कविका मीना क्षत्रियों से	२०
मीना क्षत्रियों की प्राचीनता	२१
दशावतार	२१
अग्निपुराण का मत	२२
अभिलाख सागर तरंग छेः में अभिलाखदास जी का मत	२३
अग्रदासजी महात्मा की भक्तमाल में	२३
इतिहासज्ञों का मत	२३
अनुभव प्रकाश ग्रन्थ का मत	२४
भाटों की विरुदावलो	२५
एक कवि का कथन	२६
एक दूसरे कबि	२६
परशुराम अवतार लाबनी	२७
भूपनृपसहसवादूने क्षणिकमें	२६
सुनहुसहस्रभुजराय	३०
परशुराम का रेणुकोस	३२
तर्पण मुझे दरबार	३३

इस प्रकार सुत को लिखा ३४
ब्राह्मण का विचार ३४
परशुराम जी को विश्वास ३६
अग्निकुली शाखोस मीन कुल की उत्पत्ति ३७
अनेक गोत्रोंकी उत्पत्ति ३७
यास्कमुनि का कथन ३८
गोगाजी के ग्रन्थ से ३८
मीना जाति की उत्पत्ति शिव पुराणानुसार विधि नारद संवाद ३९
मीना क्षत्रियों के प्रति कतिपय विद्वानों का मत ४०

नृपसोपान

श्लोक मीनपुराण ४२
मीनाराजा मयूरध्वज ४३
मीनोवाले माधव जी ४३
मीनाराजा चन्द्रगुप्त ५०
मीनाराजा विन्दुसार ५३
" मानमौर ५४
" आलनसिंह ५५
" नाथूराव ६६
" राबमेदा ६७
देश मैनाल अन्दरगुजारा करू ६९
मीनाराजा चुड़देव ६९
शूरसिंह बालावार्ट ७१
" भानोंराव ७३
" नादरसिंह गैटोर ७८
" श्रबणसिंह ७९
अवगुण त्यागहु मारणवीर ८२
रमथंभौर का युद्ध ८३
यवनों के संसर्ग से महिमासिहका मुसलमान बनना ८५
मीनों की १२ पाल ८५
चित्ररूपा परिचय ८६
" बेगम के फन्दे में महिमा का फंसना ८६
शाह बेगम की वातचीत ८९
रणथंभँवर को दूत भेजना ९१
जगोदराज कवि दोदा ९२
" छंद ९३
मीना राजा सक्तामी पामान ९४
अजमतसिह माँची नृप का वीस हजार मीनोंकी फौजलेकर अलमा उद्दीन को बनास नदी पर रोकना ९५
सुनोनृप दिल्लीपति संदेश ९८
युद्ध तय्यारी १००
महिमासिह की तीर कुशलता १०५
गवरू सिंह की तीर कुशलता १०५
महिमासिह तथा हमीर संवाद ११२
पुनः महिमा तथा हमीर संवाद ११५
महिमा सिंह तथा गवरू सिंह का युद्ध ११६
बूंदी के मीनाराजा जैतासिहजी ११८
हाड़ौती नाम होने का कारण १२२
दारू निषेध गीत की कालावादल १२३
मीनाराजा भीमपाल १२३
मीनाक्षत्रिय जाति के अन्तिम नरेश वाधाराव १२७
जगमारण सन्तान १२७
हम्मीर का आत्मघात करके प्रधाद फोड़ना १२८

शिक्षा सोपान

मीना क्षत्रियों का मारण क्षत्रिय नामकरण श्लोक मीनपुराण १३४
मीनेश प्रार्थना १३५
मीनाक्षत्रियों के अलग अलग नाम १३६
हाड़ोती में मीना जाति के तीन टुकड़े १३६
पडिहार गर्हित नहीं १३७
ईर्षा त्यागहु मारणवीर १३८
मोजाय निषेध दृष्टांत १३९
मिन-क्रूर्म क्षत्रियों की फूट का परिणाम १४०
फूट वृक्ष का जन्मदाता भारत में दुर्योधन १४०
हमसव अभिन्न एक ही पिता की सन्तान हैं। १४१
महाराज शूरसिंह तथा रानी बालावाई का परमार्थ विषयक संवाद १४२
नीतिशास्त्र वर्णन १४४
अंधविश्वास व्यास कथा १५९
नरक वर्णन १६३
अष्टादश नरक १६८
महाराज शूरसिंहका रानीसे १७४
यमराज का दरवार १७५
गाना संग्रहीत १७६
मीनाक्षत्रिय जाति की वत्तीस तड़ें १८०
मीना क्षत्रिय जाति के विष्णुभक्त श्री घाटम दास जी बलीग्राम निवासी १८१
मीनाक्षत्रिय जाति के वावन सौ गोत्र १८३

वन्देमीनहरिम्

मत्तद्विरेफ कलयान्वितवनमालया, अपराङ्ग स्त्रजमुकुटांगद-
पटदुकूलया सर्वः सर्वगतम् नतोऽमरं मारणोमीश्वरम् ।।१वं०दे

मत्स्यरूपश्चगोविंदम् मीनाभिधंवर्गस्य प्रश्विष्णुम्-
अखिल वतारमूलं यथाकूर्म नरहरिंवामनम् ।।२ वन्दे०हरिम्

मीनामीनस्यअनवयम् प्रथितजगतिम् योस्य वंशस्यसृष्टारंहरिं
भार्गवम् राघवम् वासुदेवेम् नारायणम् वन्दे० ३

फुल्लपद्मशुभगास्यईक्षणम् नीलोत्पल नीलाभश्रीवरम् ।
कृष्णम् कोलम्बुद्धम्कल्किमितिम् शङ्खप्रभृत्ति हत्तारकम्
वन्दे मीन हीरम् ४

सतरजतमत्रयगुणपरम् शाश्वतम् अजं निरञ्जनम् ।
कर्त्ताभर्त्तासंहर्त्ता नमामहै नारायणम् ।।वन्दे मीन हरिम् ।।५

* अथ प्रथम बारात सोपान प्रारम्भः *

●

मौक्तिक राम दर्भ विरचितम्

★

नारायणम् नमस्कृत्य नरम् चैव नरोत्तमम् ।
गो गौरिगजास्य भवमश्च नत्वा मीनायण वक्ष्याम्यहं ॥१॥

□

मीनदेव परावेदा मीनदेवपरामखाः ।
मीनदेव परायोगा मीनदेव पराक्रियाः ॥२॥
मीनदेव परं ज्ञानं मीनदेव परंतपः ।
मीनदेव परो धर्मो मीनदेव परागतिम् ॥३॥
एतान्नानावताराणां निधानं बीजमव्ययं,
यस्यांशासेनसृज्यन्ते-देवतिर्यङ् नरादयः ॥४॥
मीनः सर्व सुरासुरेंद्रमहितो मीनंबुधासंश्रिताः ।
मीनेनाभिहतश्चदैत्यनिचयो मीनाय निक्ष्यम नमः ॥५॥
मीनाद्धर्ममिदंप्रवर्त्त मनघं मीनस्यमैंनीप्रजाः ।
मीने व्याप्तमिदम् ब्रह्मांडमखिलम्-हे मीन! निजभक्ति प्रयच्छ मे॥६
मीन पुराण द्वितीय प्र. स्कंधेन ॥

❋

नारायणम् नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
गो गौरि-गजास्य, भवमश्व नत्वा मीनायण वक्ष्याम्यहं ॥

प्रार्थना

★

मारण कुल प्राण अधार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे।
मैंनी नैया पतवार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे।
मीनावतार कृतयुगमें ले, शंखासुरका संहार किया।
वेदों के उधारन हार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे ॥१॥

❊

कच्छप बन कभी पधारते हो, बाराह कभी तन धारते हो।
वसुधा-भर टारन हार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे ॥२॥

❊

आधानर आधासिंह कभी, बौना सा वामन बामन बन।
बलिगर्व नशावन हार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे ॥३॥

❊

केशव राघव भृगु राम कभी, वृद्धावतार श्रीकल्कि कभी।
कंसादि प्रनाशन हार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे ॥४॥

❊

आजाओ मारणमेदिनि पर, मीनेश बनो वर मैंनि उदर।
'मौक्तिक' कुल जाति शृंगार हो तुम, मीनेश तुम्हारी जै होवे ॥

मङ्गला चरण दोहा

हिये विराजहु आय ।
गण नायक-संध्येश्वरी, हिये विराजहु आय ।
मीना जाति-सुधार हित, दो कछु शब्द बनाय ॥१॥
मीन-कमठ-बाराह पुनि, कर नरहरि-प्रणिधान ।
केशव-राघव-परशु युत, नमो बुद्ध भगवान् ॥२॥
वामन-कल्कि-वरिष्ठके, चरण मनाइ सहेत ।
मारण जाति सुधार हित, जन कछु शिक्षा देत ॥३॥

※ चौपाई तर्ज तु. कृ. रामायण ※

अब्द बीस सौ उत्तर चारा । तिथि हरि वासर पाख उजारा ॥
भृगुदिन पूष मिनेश प्रेरना । कीन्ह अरंभ मिनायण-रचना ॥
ऊनबीस-शत-अड़तालीसा । गुनहु गुरंडा-सन सु-सुधीशा ॥
शशिसम्बत जयहिंद सुजानों । भारत भृत्य-अलान तुड़ानो ॥
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालीसा । भृगुदिन देश स्वतंत्र मनीषा ॥
प्रजाप्रधान दिल्लिरजधानी । श्री बुध नहरू जवाहर ज्ञानी ॥
श्रीयुत कर्मचंद मुनि गाँधी । नित रोकी अशांति बड़ि आँधी ॥

※ तर्ज राधेश्याम रा० की भांति ※

इस ही प्रसंग में आनँद है, मारण वीरों ! घट-पट खोलो ।
पुनि बड़े प्रेम से एक बार, मीनावतार को जय बोलो ॥

※ दोहा ※

विधि-हर-हरि-गणपति गिरा, सुमिरि मीन भगवान् ।
प्रथम कांड (बारात) अब, बरनहुँ सुनो सुजान ॥

सभी जातियाँ जग चुकीं, मीन जु जागी नाहि।
लम्बे हेला मारता, मारण मौक्तिक याहि॥

*** गाना ***

मीणों ! अब असभ्यता त्यागो ॥टेक

सोचो तो मैंनाल निवासी, सब विधि अपनी जाति विनाशी-
ओ वलिदानों के विश्वासी, मोह निशासे जागो ॥१॥
अवसर है निज जात्युत्थाना, सोते रहना है अज्ञाना-
फेंक अविद्या पोट मलाना, नाग्रिकता में पागो ॥२॥ मी०
रसिया देवरिया अरु छगनी, इन कुगान से हाँसी अपनी-
व्याह कुगान ते बिगरी रमनी, अबभी राह पर लागो ॥३॥
मीणों अब असभ्यता त्यागो ऽऽऽऽऽऽऽऽ

*** तर्ज राधेश्यामः- ***

आलस्य और निंद्रा तजकर, अब मोह निशासे जागो तुम।
इस घोर अविद्या अपनी को, होकर सचेत झट त्यागो तुम॥
रसिया देवरिया शंकरिया, ये गीत आपके कभी नहीं।
नर सँगती सँग रसिया गाना, यह महिलाओं का धर्म नहीं॥
मोटे बकरे हम क्योंकर हैं, बकरा तो हमारा भोजन है।
मीणों पर अध्यारोप वृथा, करने का कौन प्रयोजन है॥

*** दोहा ***

धन्यवाद है आपको, सुनहु मीन सरदार।
मोटा बकरा ज्यों बने, कहौं कथा विस्तार॥

इक जवान गुर्जर का लड़का, प्रतिदिन छेरियाँ चराता था।
अपने छेरी दलको लेकर, जो नित जंगल को जाता था॥

※ दोहा ※

इक दिन उसको विपिन में, मिला सिंह शिशु एक।
पकड़ लिया लाया सदन, पाला सहित विवेक ॥

नित अजा दुग्ध इस केहरि के, शावक को युवक पिलाता था।
धर दिया नाम मोटा बकरा, यह ही कह उसे बुलाता था ॥
वह भी शश्वत् अनुगामी इव, उस गुर्जर के अनु फिरता था।
पालतू श्वान की भाँति सदा, सारा चरित्र वह करता था ॥
गुर्जर की कूट नीति में फँस, वह निज असलीयत खो बैठा।
मैं कौन हूँ इसको भूल गया, औ मोटा बकरा हो बैठा ॥
अब तो अपने को आप स्वयं, मोटा बकरा हूँ कहने लगा।
छेरी-दल मध्य सदा रहकर, गुर्जर की सेवा करने लगा ॥

※ दोहा ※

वृक शृगाल व्याघ्रादि सब, पेखि सु चरित विलोम।
आपस में कहने लगे, नृपपर यह तम–तोम ? ॥

जो भक्ष्य हमारा इनका है, उसमें बनराज हैं घिरे हुए।
अफसोस है जिनसे अजापुत्र, कुश्ती हित आगे खड़े हुए ॥
इससे अब यही ज्ञात होता, संन्यासी हो बनराज गये।
रानी सिंहनी कुटुँब परिहर, उपराम हो ये मृगराज गये ॥
परिचय की सबको अभिलाषा, लेकिन पूँछत भय खाते हैं।
अंततः अपरिचित हो सारे, हिंस्रक बनमें भग जाते हैं ॥

※ तर्ज तु० कृ० रा० ※

यहि विधि गुर्जर अजा चराहीं। पृथुल अजासुत बलभय नाहीं ॥
अजा अभय अटवी मधि चरहीं। वृकगण हिंस्रकते नहिं डरहीं ॥

*** सोरठा ***

सुनहु मीन सर्दार, बनमधि इक दिन अस भयऊ।
बकरी गंध सँभार, पंचानन आयो अपर ॥
लख्यो सजाती भ्रात अजा तोममधि मृगपती।
अकसर हुइहहिं बात, कारण सोचत थकि रह्यो ॥

जब दोनों की भइ चार आँख, तब इंगित कर ढिग बुला लिया।
कौतुक बंश अज अठखेली तज, यह भी उसके ढिग चला गया ॥
कर कुशल प्रश्न द्वौ बैठगये, वन केशरि प्रश्न लगा करने।
हैं कौन आप पुनि कहँ निवास, कृपया मुझसे इतना बरनें।
बनराजके उत्तर में बोला, महाशय मैं मोटा बकरा हूँ।
है अमुक अजा मेरी माता, उसके दिलका मैं टुकड़ा हूँ॥
जनपद है मेरा अज आलय, सुखसे निवास वहाँ करता हूँ।
अजगण हैं मेरे सजातीय इन सह सुख सहित विचरता हूँ ॥

*** दोहा ***

पृथुल अजा सुतकी सुनी, बात जभी वनराज।
कहा यह अनृत बोलते, मित्र तुम्हें नहिं लाज ॥

मोटे बकरे तुम कभी नहीं, मां अजा तुम्हारी कभी नहीं।
अजगण न तुम्हारे सजातीय, तव कथन यथारथ कभी नहीं॥
तुम असल सुपुत्र सिंहनीके, सिंहनी तुम्हारी माता है।
हैं पिता आपके असल सिंह, अरु सजातीय हम भ्राता हैं॥
अध्यासी बोला सिंहनिसुत, हम नहीं अजासुत हैं भाई।
हम तो बस मोटे बकरे हैं, अज हैं मम सजातीय भाई॥

*** तर्ज तु० कृ० रा० ***

मोह अंधता लखि अधिकाई। मृगपति बार २ पछिताहीं॥
कौन भाँति अध्यास मिटाऊँ। निज स्वरूप सम्यक् परिचाऊँ॥

*** बनवासी सिंह बोला ***

अच्छा मोटे बकरे ही सही, कृपया मुझको यह उत्तर दें।
पहले तन मेरा पुनि अपना, देखें औ रंग बरण कह दें॥
अज्ञानी राउर पीला है, निज लखि विस्मित पीला ही है।
रेखा भी तिरछी अरु काली, सब इकसी रंग मिला ही है॥
बनवासी बोला अब अपनो, बकरे तन दृष्टि गिराओ तो?।
सम्यक् सब समालोचनाकर, पुनि पलट आप अरु आओ तो॥
अपना तन देखा पीला है, बकरे का बिल्कुल काला है।
की पूँछ समीक्षा तो क्षुद्रा, अपनी तो दीरघ आला है॥

*** बनवासी उवाच ***

*** दोहा ***

देखो कर पद आपने, नखयुत अंगुलि पाँच।
बकरे के तो हैं शफा, मित्र सु सम्यग् आँच॥

*** अध्यासी सिंह उवाच ***

ओम कथन तव ठीक है, महाशय है स्वीकार।
ये अवयव तो भिन्न हैं, मुखका करिय विचार॥

*** बनबासी उवाच ***

अच्छा आइये साथ मेरे, चलिये निकटस्थ सरोवर पर।
उसके अति निर्मल पानी में, प्रतिबिम्बऽवलोकय निज मुखकर॥
ठहरो पहले मुझको सिरसे, पद तलक सकृत अवलोको तुम।
पुनि पानी में निज रूप देख, मेरी तुलना कर घोखो तुम॥
यदि अस्माकम् वपु से अभिन्न, युष्माक कलेवर हो भाई।
तो मैं तो बन का राजा हूँ, बतलाओ तुम क्या हो भाई॥१॥

※ दोहा ※

अध्यासी ने ताल में, देखा अपना रूप ।
सांगुपांगु अन्वेषि तन, सचमुच हौं बनभूप ॥

※ शिक्षक सिंह उवाच ※

मृगपति हूँ मैं तुम मृगपति हो, हम तुम दोनों पंचानन हैं।
मोटे बकरे तुम मित्र नहीं, तुम हम दोनों नृप कानन हैं॥

※ दोहा ※

पटल फटा अध्यास अब, पाया आत्म स्वरूप ।
सिंह-सिंह हौं वस्तुतः, गुर्जर मम रिपु—रूप ॥

इस पापी ने मुझ नृप मणि को, हा कितना लघुमर करडाला।
सिंहीयरूपरेखा गुम कर, अजियन सँग सहचर कर डाला ॥
बस इसी समय जाकर सत्वर, जालिम का बधकर आऊँगा ।
परिचायक बोला नहीं मित्र, वहाँ पर तो मैं फिर जाऊँगा ॥

※ अध्यासी सिंह बोला ※

अच्छा तब बोलो सजातीय, अब क्या कर्त्तव्य हमारा है।
शिक्षक बोला ठहरो पहले, करना अभिषेक तुम्हारा है॥

※ दोहा ※

ऐसा कह सत्वर चला, पड़ा अजा दल माँहि ।
पाँच अजासुत मारकर, लाया उसके पाँहि ॥
गुर्जर दहशत से मरा, की गा इत उत भाजि ।
सिंह पालने का मजा, पाया उसने आज ॥
हाँक मारि पुनि केसरी, लिया स्वकुटुँब बुलाइ ।
सुता-पुत्र-तिय सिंहनी, आयो सर-तट धाइ ॥

पुष्करणी का पवित्र जल लै, संस्कारित के अभिषेक किया ।
निज सुता विवाही यौतुक में, उस सारे वन का राज्य दिया ॥
पुनि अशन पान कर आनँद से, समुझाई राजनीति हरि को ।
पुनि सुता सौंपि बहु क्षमा याच, सुत ती सह चला गया घर को ॥
बस सिंह यहाँ मीनेश्वर हैं, मैंना उनके शिशु हैं सज्जन ।
गुर्जर इर्षा नृप क्षत्रिय हैं, बकरी पय बड़ असभ्यतापन ॥
तुम असली मीन क्षत्रियः हो, सिंहीय उपाधि तुम्हारा है ।
मैंना हो मारण क्षत्रिय हो, अति उत्तम ज्ञाति तुम्हारी है ॥

मोटे बकरे यों कहे, समुझे मारण वीर ।
असलीयत तुम खोय कर, कैसे बने हकीर ॥

※ बनड़ा ※

बना जी थां छो हरि की जाति बना जी थां छो हरि की जाति ।
श्री मीनेश पिताजी थाँका श्री लक्ष्मी जी मात ॥टेक॥
पहल्याँ सत जुग म्हांइ नैस इक शंखासुर भयो दैंत ।
चार वेद की चोरी करके गयो समुँद्राँ पैंठ बनाजी० ॥१॥
बिनावेद दुनियाँ रही स जी भूलो धर्म विचार ।
धर्म रीत जाणें विना स कोइ वढ़ियो पाप अपार बनाजी० ॥२॥
वेद उधारन कारणेस जी आये सिरजन हार ।
राकस वधके वास्ते स प्रभु लियो मीन अवतार ॥३॥
शङ्खासुरको मारकै जि कोई मीन भया नर रूप । बनाजी
राज कियो सब जगत को जि कोइ छत्रिय विष्णु स्वरूप ॥४॥
मीनराज राजा हुया स जी सत जुग सत की बात ।
सातलाख पैंतिस हजार बरसा तक कीनो राज ॥बनाजी५॥
राजपूत छत्तीस कुल जि बना त्रेतादिक जुग—धार ।
आदू वासी मीन वंश बना ज्याँको अन्त न पार ॥६॥

बारह पाल बतीस तड़ जि कोई बावन सौ छे गोत।
वंश मीन भगवान नेंस ह्यॉं राज करयो छै व्होत ।।७ बना॰

✻ बनड़ा ✻

बनाजी थाँ छो सिंह सुपूत बनाजी था छो।
बनाजी थाँ छो सिंह सुपूत बनाजी था छो।
सिंह सुपूत आदूवासी मीन वंश का पराचीन रजपूत ।।
देश गवालिर आसपास थां रावत कहलाओ।
राजपुताना मांहि नेस थाॅं मीना कहलाओ ।।१।।
मध्यसु भारत देश मालवा में देशी रजपूत।
खान देश औ बरार मांहि थां परदेशी रजपूत ।।२।।
कच्छप घात पुराणा वासी रावत मेवासी।
जमीदार और मीनाठाकुर था जूनावासी ।।३।।
मीना और मीनोत छत्रि मारण संज्ञा थांकी।
श्रीविष्णुः जी पिता आपका माता पद्‌मा सी ।।
बनाजी था छो सिंह सुपूत।

बनड़ी (संगृहीत)

बनी तू सीख हियै धरजे ऐ बनी तू सीख० ।।
सासरियामें जाय सभी सूं मेल घणों करजे ।।टेर
जद तू जावे सासरे स काँई करजे सद व्यवहार।
देवर नणदाँ ऊपरेस तू रखजे पूरो प्यार ।।१।।
सासू-सुसरा हुकमकरे जी मुजब तू करजे काम।
मातपिता समझजे तू वाँने दीजे घणो आराम ।।२।।
धर्मदया व्रत नेम सभी छै पति की आज्ञा सार।
ब्रह्मा विष्णु हरी हर थारो पति ही जीवनधार ।।३।।
हिल मिल कर तू चाल जे स कोई मीठी बोली बोल।
घरका कारज करबा माहीं मती राखजे पोल ।।४।।

पाड़ोस्यां सूं हिलमिल रीजे दुख में दीजे साथ।
घर आया भूखा नहिं जावे जदी रेवसी बात ॥६॥
पति बाहर सूं घरमें आवे जद तू दीजे मान।
टहल वन्दगी करवा को तू मती चूकजे ध्यान ॥६॥
ऐसी नारी सबने प्यारी वणसी विस्वा बीस बनीजी-
वणासी विसवावीस। 'कुंदन' ऐसी सतिया ने भो-
जगत नवावैं शीश ॥ वनी० ॥ ७ ॥

बनड़ी (संगृहीत)

थें तो सूधो मारग चालो री म्हारी चतुर बनी ॥ टेर ॥

बिगड़ो सूं बोलो मति वनी दोज्यो परी धुतकार।
ज्यो तू कुल की साबली बनि राखो ऊंच विचार ॥१॥
कुलटा सूं कुल बीगड़ै बनि होइ जमारो धूल।
कूमारग लेजावसी वनि संग न कीजै भूल ॥२॥
विन विद्याके जगतमें बनि जीवन हैं अंध कूप।
खाबो पीवो पहरबो वनि लागे है विष रूप ॥३॥
इणियन लूटै चोरड़ा वनि डंड सकै नहिं राज।
या दौलत सबसे बड़ी बनि सारे पराया काज ॥४॥
वा कन्या काबिल नहीं बनि पढ़बा सूं जीब चुराय।
गुणी पती के संग में बनि फूहड़ न शोभा पाय ॥५॥
अणपढ़ आच्छी नहिं लगै वनि वाणी उगेले जहर।
सासरिया में जाय के बनि बांधे वा सबसूं बैर ॥६॥
छोटा ने समझो डीकरा बनि बड़ा ने जाणों बाप।
बीर बराबर जाणज्यो बनि परपुरुषां ने आप ॥७॥

* बनड़ो *

थांनै विद्या पढ़बो सीखो जी म्हारा सुघड़ बना टेर

विद्या पढ़ ज्यों लाडला जी कर ज्यो पर उपकार ।
लायक बणज्यो जगत में थांनै जाणें सब संसार ॥१॥
देश और परदेश में जी विद्या ही सुख मूल ।
जो विद्या पढ़ते नहीं वे करते गजब की भूल ॥२॥
ज्ञान बिना भटक्या फिरैं बना वे मति हीना लोग ।
अकल बिना मिलता नहीं कोई मनमान्या सुख भोग ॥३॥
मूरखता फैला रही बना घर घर म्हांही बैर ।
विद्या दीपक के बिना कोई आंख छता अंधेर ॥४॥
देशी बस्तर पहर ज्यो बना राखो इज्जत आप ।
धर्म रहै धनभी रहै कोई मिटसी मनका पाप ॥५॥
माता बराबर जाणज्यों बना परनारयां न लाल ।
नजर जमी पर राखज्यो थांमें बढ़सी ऊंचो ख्याल ॥६।

* गाली *

रघुवरजी को लाड लडावां जी नौरंगी गालो गावां ॥टेर ॥

थां जीमो रामजी खाजा थांका पिता छे दशरथ राजा । १॥
थां जीमो जी रामजी लाडू थां चारों भाइ सगा साडू ॥२॥
थों जीमो जी चतुर अब पूड़ी, कौशल्या होगइ बूढ़ी ॥३॥
थां जीमो जी चतुर अब नुकती दशरथ में रही न शक्ती ॥४॥
थां जीमो जी रामजी सीरो, रिपुदमन लषण थांकोवीरो ॥५॥
थां चारों ही चतुर जीमो लपसी थांकी भगनीने लेग्यो तपसी ॥६॥
थें चारों ही चतुर चाबो वीरा, थें जनमाया खा २ खीरा ॥७॥
गाली गावे जो राम थांकी सासू बांके पड़े प्रेम का आंसू ॥८॥
जी, नौरंगी गाली गावां रघुवर जी को लाड लडावां ॥९॥

❀ मीनेश आवाहन प्रार्थना ❀

श्याम सलोने असुरारी, मीनमुरारी विष्णो ?
दुष्ट प्रहारी आजा दुःख हटाजा ॥
असलीयत खोकर मारणकुल रो रहे रो रहे ।
मीना क्षत्रिय यादभुला प्रभु सो रहे सो रहे ॥
आजा कंठ लगाजा रे ! अभय बनाजा आजा ॥१ दुष्ट०
बुरी दशा कीन्ही जेतारन हाविष्णो ? हाविष्णो !!
उत्तम थे मध्यम करडाले हाविष्णो ! हाविष्णो !!
आजा मान बढ़ाजा रे ! क्षत्रिय बनाजा आजा ॥२ दुष्ट०
छत्रपती थे तेरे वंशी कभी हरे कभी हरे !
वे गर्हित गाने गा नाँचत अभी हरे ! अभी हरे !!
आजा चेत कराजा रे शिक्षित बनाजा आजा ॥३ दुष्ट०
देशी क्षत्रिय-पचवारन में भेद नहीं भेद नहीं ।
पडिहारे रावत कच्छप सब एक अहहिं एक अहहिं ॥
मीनाक्षत्रिय-छत्तिस कुल में भेद नहीं भेद नहीं ।
फिर भी हमसे द्वेष बढ़ाते खेद यही खेद यही ॥
'मौक्तिक' प्रेम बढ़ाजा रे ! सब कहँ मिलाजा आजा ॥ दुष्ट०

इति श्री जगन्नाथात्मज मौक्तिक रामदर्भ (डाभला) परमार-मारण क्षत्रिय सीमलखेड़ी वास्तव्य विरचित्

श्री मीनायणे वारात सोपानं समाप्तम् ॥

उत्पत्ति सोपान

★

❋ श्लोकाः ❋

क्वचिद्ब्रह्मा क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्रुद्रः प्रशस्यते ।
नानेन तेषामाधिक्यमैश्वर्यं चातिरिच्यते ॥
मूर्खा-निंदंति तान्वाग्भिः संरंभाभि निवेशिनः ।
यातुधाना भवंत्येव पिशाचाश्च न संशयः ॥
मीनो गुणत्रयातीतश्चतुर्व्यूहो महेश्वरः ।
सकलस्सकलाधार- शक्तेरुत्पत्ति कारणम् ॥
(मी० पु० स्कंध १ अ० ४

❋ मीनेश प्रार्थना ❋

भाई हर बार पुकार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ।
सच्चे मनसे उच्चार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥
उसके होते नहिं ताव हुई तुमको अधगति पहुँचाने की ।
पतितोंका है उद्धार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥१॥
जो महाप्रलय अवसान समय सब जीव तत्त्व ले सोता है ।
शेषी शय्या शृंगार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥२॥
पुनि नाभिकमल से अज प्रगटा जो सृष्टिचक्र कहँ रचता है ।
अज-हरि-हर रूपाकार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥३॥

मेना माता से सर्व प्रथम मीनावतार जो लेता है।
सब वसुधा भोगनहार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥४॥
ऋषिलाख अपर खगराम सहस वर्षों तक जिसने राज्य किया।
मीनों तुम्हरा करतार यही मत्स्याय नमः मीनाय नमः ॥५॥

※ दोहा ※

चरण कमल मीनेश नमि, कहुँ उत्पत्ति सोपान।
आशा कृपया मीनगण, सुनैं याहि धरि ध्यान ॥

※ सोरठा ※

वन्दौं मुनिपद कंज, मीनकथा जिन निर्मयऊ।
निर्गत जिनको वंश, अग्नि कुली चौहान ते ॥
गोठवाल गोत्रीय, नाम मग्न सागर मुनो।
उखलाना वासीय, मारण कुल आचार्य वर ॥

※ दोहा ※

मुनिकृत मीनपुराण जो, पढ़ै सुनै चित लाय।
जाति गौत्र कुल विज्ञ हो, जन्म सफल हो जाय ॥

※ हम मीना क्यों कहलाये ※

अच्छा हम मेना औ मैंना, अरु मीना क्यों कहलाते हैं।
यह शब्द वीरता द्योतक है, यह तत्त्व प्रथम बतलाते हैं ॥
मैंनिः का अर्थ बज्र अथवा, अति वज्र काय ही होता है।
मेना मैंना-मीना फलतः, तुमको सारा जग रोता है ॥
पुनि पूर्वकाल में बलशाली, मीना महिपाल ध्वजाओं पर।
शर-मुकुट-वज्र-मत्स्यादिक के, रहते थे चिन्ह परम सुन्दर ॥

इसी हेतु इस जातिका, नाम करण इमि गाय।
मेना—मैंना तीसरा, मीना मेरे—भाय ॥

मीनध्वज तथा मीनकेतन, और मीनकेतु भी कहते हैं।
जातीय-गौत्र-कुल-वंश चिन्ह,सब रथ पताक कह देते हैं।।
जो अनाचार-अघ-संकट से, प्राणिन रक्षै आश्वास वहै।
मीनोत्त उसे जगतीतलमें, यजुः वेद महीधर भाष्य कहै।

※ मी तथा ना की व्याख्या ※

है मी का अर्थ महालक्ष्मी, अरु इनः कोऽर्थ पति विष्णुः है।
सुतरामऽपि मीना श्रेष्ठ जाति, कर रमा-विष्णुः प्रभविष्णुः है।।
पुनि युग २ में मेना नाम्नी, स्वर्गीय देव रामाओं ने।
मैंना नामक क्षत्रिय जाती, की प्रसव देव वामाओं ने।।

※ दोहा ※

अब हम मीना जातिके, आदि पुरुष की गाथ।
कहते हैं मारण सुनो, बड़े ध्यान के साथ।।
युगों-२ के भेद से, विविध भाँति उत्पत्ति।
हुई श्रेष्ठ इस जाति की, भ्रमं न कोई व्येक्ति।।

※ मीनेश महिमा ※

पैरों के अन होते भी जो, वायु से अधिक भग सकता है।
और बिना आँख के सब जगका, जो दृष्टा है हो सकता है।।
जो अभि से हस्त चरण-मुख सिर, नासिका श्रवण रिंद्रिय वाला।
जो अणु से अणु औ गुर से गुर, सर्वः व्यापी शक्ती वाला।।
जिसके इकदिनमें अगणित अज, अगणित विष्णुः भुक्ते हर हैं।
वेदों से भी जो अनिर्वाच्य, जो सतचित ब्रह्म परात्पर हैं।।
जिसका मुख अग्नी जीभ वरुण, अरु उदधि अगाध उदरवर है।
जिसके पद हैं पाताल लोक, अरु शीश स्वयंभू के घर हैं।।

कटि देश में जिनके अतल लोक, उरुदेश में वितल लोक स्थित ।
जानुओं में सुतल लोक जिनके, जांघो में तलातल है कल्पित ।।
महतल है जिनके गुल्फ देश, अरु प्रपद रसातल हैं जिनके ।
इस प्रकार पदतल में पाताल, नाभी में भुवर्लोक जिनके ।।
उरस्वर्ग वक्ष में महर्लोक, ग्रीवा में मनुज लोक जिनके ।
दोनों स्तनों में तपः लोक, माथे में सत्यलोक जिनके ।।
इस प्रकार इस विराट नर के, शिर में वैकुंठ लोक गाया ।
अथवा पद-नाभी-मस्तक में, तिरलोक सुकल्पित बतलाया ।।
जो उत्पत्ति थिति संहार करै, चर अचर देव-देवेश्वर हैं ।
जिसके प्रति रोम व्रह्मांड लगा, मीनों का वही मीनेश्वर है ।।

※ चौ० तु० कृ० रा० ※

※ विष्णु के मुकुट की मणि से मैंन पुरुष की उत्पत्ति ※

सूर्य वंश में भूप घनेरे । एक एकते बहुत बडेरे ।।
मारण तिनमें सगर सुनामा । भूप चक्कवै सब गुण धामा ।।
केशनि सुमति नाम नृप वामा । सुमति पुत्र असमंजस नामा ।।
अंशुमान असमंजस को सुत । केशनि साठि सहस सुत निर्मित ।।
नन्नानवे यज्ञ नृप कीना । अश्वमेध शतयें मन दीना ।।

●

यह हाल देख कर डरा इंद्र, श्री विष्णुः जी की शरण गया ।
उन पतित सुपावन चरणों में, गिर प्रेम से स्तवन नमन किया ।।
वे सर्वउरालय नारायण, अभिप्राय इन्द्रका अवगत कर ।
प्रगटाते भये मुकुट मणि से, इक तेज स्वरूप वीर वर नर ।।
वह सद्य प्रसूत मनुजपुङ्गव, निज पिता विष्णु का स्तवन कर ।
बोला क्या आज्ञा है भगवन्, मेरे प्रति कहिये करुणाकर ।।

*** दोहा ***

प्रभु बोले मैंने तुम्हैं, मुकुट मणी से आज।
सुत फलतः पैदा किया, करहु शक्र कर काज॥

मैं देता हूँ वरदान तुझे, नरलोक सर्व नृप-नायक हो।
सब जाति शिरोमणि तुव जाती, होगी तू इन्द्र-सहायक हो॥
तेरा किरीट मणि से उद्भव, इसलिये मैनवर नाम तेरा।
जाओ निजवंश प्रसार करो, नर लोक में इकछत राज तेरा॥

श्री हरि का आदेश पा, चला इन्द्र के साथ।
मृत्युलोक आकर प्रथम, छीना सगर तुरंग॥

लेगया पताल क्षणिकभर में, मुनि कपिलाश्रम पर जा बाँधा।
इस प्रकार अपने कौशल से, कर दिया सगर नृप मति आंधा॥
बरसों तक हय का अन्वेषण, कर २ नृप सगर हताश हुये।
इस चक्कर में इनके पूरे, षष्ठी हजार सुत नाश हुये॥
सुरराज ने इन मीना नृप को, निज अभिसे रक्षक जान लिया।
हो अति प्रसन्न मेनका नाम, उर्वशी से तब कर व्याह दिया॥
जिससे असंख्य संताने हो, इस धराधाम पर छाई हैं॥
माता मेनका के होने से, मेना क्षत्रिय कहलाई॥

*** दोहा ***

मैंना क्षत्रिय जाति के, विषय आर्ष मुनि कहहिं।
अस्य जातिकर अस्य जग, अस्यनाम इमि अहहिं॥
एक समय कैलाशमें, शिवा, शिवाके—नाथ।
बैठे थे हो रही थी, प्रश्नोत्तर में बात॥

पतिव्रता जगत की नारिन का, कर पक्ष उमा सु लड़ रही थी।
शङ्कर जी नर के पक्ष में थे, दोनों में बहस बढ़ रही थी॥

गौरी बोली साध्वी सत पर, यह सारा जगत ठहर रहा है।
शिव अच्छा पहले अशन करो, हमको तो क्षुधा बढ़ रहा है।।

सत्वर अशन बनाउ प्रिय, इमि कह भोला नाथ।
तीन लोक की अग्नि लै, चढ़े तुहिनगिरि माथ।।

उस हिम-आलयगिरि-चोटीपर, चढ़कर शिव लगा समाधि ली।
इत अशन बनाने हेतु गौरि, अग्नी की सर्व तलाशी की।।
पहले चूल्हा जाकर देखा, वह केवल राख भरा पया।
ईधन को घिस २ विफल हुई, लोहा ग्रावा बहु खटकाया।।
अग्नी उत्पादक सब चीजें, कर गईं गौरि से हीला जब।
भगवती उमा जब जान गई, है हर-नटेश की लीला सब।।

※ दोहा ※

मधूच्छिष्टका देविने, सुन्दर पुरुष बनाय।
अग्नी लाने के लिये, भेजा शिव के पाहिं।।

यह चला मातु की आज्ञा पा, शंकर सन्मुख जा खड़ा हुआ।
शिव समाधिस्थ बैठे देखे, है बह्नि नेत्र भी मुँदा हुआ।।
तब भी लिलाट की वह ज्वाला, हू हू अ नाक से सरती है।
अब क्या था वीर साहसी की, बस भुजा नाक से लगती है।।
जलउठी मोम की होने से, दौड़ा गौरी के ढिंग आया।
माता ने झट तृण जलालिये, त्वर बुझा पुत्र-कर सहलाया।।
सुत मैंन पुरुष का जैसा का, तैसा भुज गौरी कर डाला।
पुनि अग्नी द्वारा भोजन भी, सब विविध प्रकार बना डाला।।

ईश्वर के प्रणिधान से, निपटे भोलानाथ।
भोजन लाओ अब प्रिये, कहा प्रेम के साथ।।

सब सात्विक अग्निपक्व भोजन, रखदिये नटेश्वर के आगे।
देखे-खाये अचरज माना, कारण इसका सोचन लागे।।

तीनों लोकों की अग्नी तो, मैं लेकर हिमगिरिशिखर चढ़ा।
पुनि कैसे अग्निपक्व भोजन, निर्माया, है आश्चर्य बड़ा॥

❁ दोहा ❁

गौरी ने यह मैन-नर, दिया चरण में डाल।
अग्नी लाया है यही, है यह मेरा लाल॥

❁ चौपाई तर्ज तु० कृ० रा० ❁

अति प्रसन्न लखि भे शशिभाला। परसा कर सिर कीन निहाला॥
तात तोहि हम अपि सुत माना। गुण बलनिधि तुम होहु सुजाना॥
मधूच्छिष्ट-तोहि उमा बनाया। तेहि हित मीन क्षत्रि मैं माया॥
मोकहँ निज उपास्य सुर मानो। प्रिया उमैं कुल देवी जानो॥
हिम ते दखिन उदधि लौं राजा। करहु चक्कवै सहित समाजा॥
मेरो नाम मीन श्रुति माहीं। पारबती मेनका कहाहीं॥
याते हमरे सुत सब मीना। परम पवित्र जन्म हम दीना॥
तुम्हरे सुत नृप मीन कहावहिं। अघ संकट ते प्रजहि बचावहिं॥

❁ अथ कवि का मीना क्षत्रियों से ❁

पाल बारह तुम्हारी हैं बत्तिस तड़ें,
गोत्र बावन सो ऊपर ये कविवर कहें।
पाल चौहान परमार गहलोत हैं,
सुनों चंदेल–कच्छाव–यादव अहे।

सातवीं है तवँर पडि हारष्टमीं, नंद निरमाण है गौड़ दशवीं कही।
बड़गूजर ग्यारवीं पाल अहै-पाल सौलंकि सूरज सुकविवर कहै॥
मीणों अज्ञान वश हो गजब क्या करो। पर को अपना कहो
निज पराया भनो। जाति को–तीन हिस्सो
में हा! देखते, बूड़ चुल्लू भर पानी में क्यों नहि मरो॥

छत्रि देशी व पचवार-पड़िहार में। भेद रंच न ज्योनार-व्यवहार में। बुद्धि तुम्हरी को विध कागने-चुगलिमा, छूत सोवर ते गैरों को अपना किया॥
ताव् मीनेश की मीना संतान सब। मीना क्षत्रिय मात्र नहीं भेद कुछ। तुम्हैं धिक्कार-धिक्कार मिन् छत्रियों? छूत सोवर ते औरों का कच्चा गहो समझो-सोचो सहो ब्रह्मा-शङ्कर-हरी। देखने में त्रिलग भासते ये त्रयी। एक के रूप हैं-एक ही एक हैं. खोलो आँखें औ देखो हैं हम-एक ही॥

❁ मीना क्षत्रियों की प्राचीनता त० राधेश्याम ❁

प्राचीन शास्त्र ज्ञाती संज्ञा, मातृक-संज्ञा पर मानते हैं।
इसलिये मेनका संज्ञापर, मीनाकुल वर्ग बखानते हैं॥
पुनि सर्व प्रथम जगके हित को, मीनावतार ले विष्णु ने।
कृतयुगमें शंखासुर वध कर, श्रुति वेद उधारे विष्णु ने॥
प्रभु का सबसे पहलावतार, मीनावतार कहलाता है।
जो प्राचीनी मिन् छत्रिन् की, सम्यक् प्रकार बतलाता है॥

❁ अथ दशावतार ❁

मीनेश जो वेद उधारक हैं, वे हि कमठ मेरु-भर धारक हैं।
बाराह कु रक्षण कारक हैं, नरसिंह जु कशिपु विदारक हैं॥
जो बलि राजा को छलता है, जो खल क्षत्रिय क्षय करता है।
पौलस्त्यप्राण वध करता है, जो क्रूर कंस संहरता है॥
निर्दयी जनों के हिरदयमें, जो दया प्रसारित करता है।
कलियुग के शेष पाद में जो, म्लेच्छों को मूच्छित करता है॥
दश कृत के संपादक, दशवतार मीनं वन्देऽहम्।
मारण क्षत्रिय कुल चूड़ामणि, तस्तविमविष्णुं वंदेऽहम्॥
समुझे मीनों तुम्हरो जाती, कितनी आदर्श पुरानी है।
आरज की अति प्राचीन मीन, क्षत्रिय यह जाति महानी है॥

वेदानुसार जब सृष्टिचक्र, धर्मानुसार अनुसरता था।
तब बल प्रताप युत मीन जाति, की ईश्वरता का शुभ दिन था॥

※ दोहा ※

श्रीमद्भागवद् व्यासकृत, द्वादशवें अस्कंध।
भावी राजों के प्रकृण, मीना राज सम्बंध॥

※ यथाः ※

शुनक नाग शिशु नमौर्य, शुंग कण्व प्रद्योत।
कुकुर कंङ्क आभीर यदु, यवन वृषल हुण गोप्त॥
पालक गर्दभ मेद भिल, विदुर तुरुष्क पुलिन।
आंध्र निषध-मागध मद्रक, मालव क्षत्रिय मोंन (मीन)॥
बाल्हिक शूर मत्स्य अरु, कौशल आदिक गोत।
मीना का मौना छपा, प्रिंटर-भ्रम-भागोत॥

मौना नामक कोई जाती, इस भारत में नहिं है भाई।
मीना का मौना छाप दिया, यह प्रिंटर की भ्रम है भाई॥

★

※ अग्नि पुराण का मतः ※

※ दोहा ※

मारण क्षत्रिय जाति का, इक उत्कृष्ट प्रमाण।
देता है निःस्वार्थ ह्वै देखो अग्नि पुराण॥

श्री उषा कि पाँच पुत्रियाँ जो, कश्यपमुनि की सुकामिनी थी।
उनमें सबसे पहलो मीना, दुसरी मौना सु नामनी थी॥
जाती संज्ञा मातृक संज्ञा, पर होती है कहदिया प्रथम।
इसलिये उक्त देवीं संतति, मीना-मैंना बस यही अलम्॥

※ दोहा ※

मीन नाथ हर उपासी, मीना जगति कहाय।
यथा विष्णु के वैष्णव, शक्ती शाक्त सुगाय॥

अयोध्या निवासो महात्मा अभिलाष दासजी का मत
अभिलाख सागर तरंग ६ में

अवध निवासी महात्मा, नाम दास अभिलाष।
अपने बिरचित ग्रंथमें, लिखा सो करूँ प्रकाश॥

मधुमास की असित पंचमी को, नृप मनुके मेध्य कमंडल से।
मीनावतार होकर प्रगटे, भगवान् विष्णु आखंडल से॥
उस समय असुर शंखासुरने, भारी दुर्नीत चलाई थी।
वेदों के हो बिल्कुल विलोम, वेदों की करी सफ़ाई थी॥
भगवान मीन ने प्रकटित हो, शंखासुरका संहार किया।
वेदोक्त धर्म लोपित का पुनि, सारे जग में परचार किया॥
पुनि मनु के राज्य सिंहासनपर, धर्मानुसार नृप होकर के।
सदियों तक प्रभु ने राज्य किया, छितिपाल चक्कवै होकर के॥
इस प्रकार सात लाख उत्तर, पैंतिस हजार समझो भाई।
हरि की जाती मीना नृपने, सारी वसुधा भोगी भाई॥
अभिलाष समुद्र तरंग छठे, अभिलाष दास ने लिखा यह।
मीना वस्तुत हरि की जात, बिल्कुल प्रमाण है सच्चा यह॥

※ दोहा ※

अग्रदासजी महात्मा, गलता केर निवासि।
भक्तमाल पोथी लिखी मीना हरि की जाति॥

※ इतिहासज्ञों का मत ※

इतिहास विज्ञ विद्वानों का, कहना है प्रलय काल में जब।
ध्रुवजी अपने प्रक्षालन करते, जल वीचि माल में जब॥

पुनि शनैः-२ जलका प्रभाव, नीचे बैठा पाताल चला।
तब सर्व प्रथम तिब्बत का औ, हिस्सा सुमेरु का कुछ निकला॥
उस समय सूर की किरणों से, जब जल निर्गत पृथ्वी सूखी।
नभ-पवन-सलिल-अगनी पृथ्वी, उत्पत्ति हुई इन तत्वों की॥
इन तत्वों द्वारा तमारि से, श्रीस्वायंभुवमनु प्रकट हुए।
अरु कितने ही उस जल थल पर, जलचर जल मानुष प्रकट हुए॥
धीरे-२ जल मनुजोंने, जल का निवास घर छोड़ दिया।
रविपुत्र मनुः ने इनका मन, शिक्षा विकासपर मोड़ लिया॥
धीरे-२ सभ्यता सभी, सिखलाई इन जल मनुजों को।
इनने भी हो कृतज्ञ अपना, नृपराज बनाया श्री मनुः को॥
सच्चे मनसे ये राजभक्त, राजा की सेवा करने लगे।
वे भी वेदोंक्त नियम द्वारा, जनताका पालन करने लगे॥
उनके औरस से सतरूपाँ, रानी जो शुभ्र तनय जाये।
वे ही इस भारत भूमी पर, बस मैंना क्षत्रिय कहलाये।

※ दोहा ※

स्वामिविशुद्धानन्द जी, कृष्णकमिल हरिद्वार।
निज अनुभव पर काश में, करते हैं निरधार॥

मच्छा (मीना) कच्छात्कछवाः, ये उदधि तीर वर्ती नर हैं।
इनहीं में हरि ने मीन कमठ, अवतार लिये भू-भर-हर हैं।
मच्छाऽवतार के वंश धरी, मीना क्षत्रिय भे मेदिनि पर।
इत्थं किरि आदिऽवतारों से, जातीं असंख्य भईं मेदिनि पर।

※ भारत भ्रमण खंड दूसरे का मत ※

※ दोहा ※

पांडव शासन कालमें, मैंनपुरी इक गांव।
तहँ के वासी छत्रियन, कारणवश तजि ठाँव॥

※ दोहा ※

देशाँतर जा अब किया, उन लोगों ने वास।
वासी मैंन पुरीय हित, मैंना जाति विकास॥

अन्वेषण से मालूम हुआ, दिशि पश्चिममें सिंधू नद तक।
मैंना छत्रिय राजाओं ने, यहाँ राज्य किया कई सदियों तक॥
मीनों के बसाये मीनपुरी, दुसरा है मीनगढ़ सागर तट।
गंगा-यमुना के मध्यदेश, है मैंनपुरी इक शहर सुघट॥

⊙

मैंना जाती के चारण और, भाटों की विरुदावलि देखो।
अपने जन्माता का प्रमाण, इसमें स्पष्ठ कृपया देखो॥

※ भाटों की विरुदावली ※

※ दोहा ※

जल शय्यापर पौढ़ते, विष्णुः कियो विचार।
नाभिकमल पैदा भयो, रची पाँखुरी चार॥
विरची सृष्टी ईश ने, निर्गुन ज्योति स्वरूप।
वेद रचे धर्म कारणे, धरयो ब्रह्म को रूप॥
चार वर्ण पैदा हुये ब्रह्मा तनु दरम्यान।
राजवंश अरु ब्रह्मकुल वैश्य वर्ण शूद्रान॥
राजवर्ण रक्षा करे, ब्राह्मण पाढ़े वेद।
वैश्य वणज खेती करै शूद्रज सेवा देव॥
शंखासुर पैदा भयो धर्म सुहायो नाह्रि।
लीन्हे चारों वेद अरु गयो समुहाँ माहि॥
विना वेद दुनियाँ रही भूली धर्म विचार।
धर्म रीति जाणें विना बाढयो पाप अपार॥

वेद उधारण कारणे आये सिरजन हार ।
राक्षस वध के हेतु तिन लियो मीन अवतार ।।
शंखासुरको मारकै मीन भयो नर रूप ।
राज कियो सब जगत कों छत्रिय विष्णुः स्वरूप ।।
मीनराज राजा हुए सतयुग सत की बात ।
राज्य वर्ष संख्या कहूँ सहस्त्र पैंतिस लख सात ।।
सतयुगकी सिरु आतमें, हूये मीन महाराज ।
तबते कुल मीनोत यह, करै सनातन राज ।।
मीनराज भगवंत को, बाढ्यो वंश बहोत ।
राजवंश को मूल यह, वापै जात मिनोत ।।
मीनराज भगवान को, वंश शुद्ध मजबूत ।
आदि सनातन आर्या पराधीन रजपूत ।।
राजपूत छत्तीस कुल, त्रेतादिक युग धार ।
आदिम वासी मीन कुल ताको अंत न पार ।।
बारह पाल बत्तिस तड़ बावन शत है गोत ।
वंश मीन भगवंत सब, राजकुली मीनोत ।।

* एक कबि का बचन *

सब देव हरो ढिग आय कहैं, बिन वेद प्रजा अति कष्ट ताहैं
सुर वेद उधारन काज हरी, तनु मीन यथा कृति रूप धरी
हयग्रीव निशाचर जाय हन्यो । लहि वेद प्रजापति मीन बन्यो
मनुवंश विकास भयो जिनते । कुल मीन कहावत है तिनते
उपरोक्त ख्याति के वर्णन से, यह अनुभव मीणों होता है
तुव द्वादश पाल बतीस तड़ें, अरु बावन शत्तम गोता है

* एक दूसरे कवि लिखते हैं *

जब आसुरो सृष्टी बढ़ी, तम भी भयङ्कर छा गया ।
घनघोर पापों की घटा में धर्म सूर्य छिपा गया ।।

पीड़ा कठिन से कठिन तर, जब साधु जन पाने लगे।
तब दुष्ट जन नाना तरह के दुःख दिखलाने लगे।।
ऐसे भयङ्कर समय में आलोक सहसा छा गया।
अवतार मीना लै प्रभो, सब लोक दुःख मिटा गया।

❋ लावनी ❋

सतयुग का हुआ जब अंत तिरेता लागा।
रजगुण जग हुआ प्रधान सतोगुण भागा। टेक।।
छत्रिय नृप प्रभुता पाइ हुए अभिमानी।
धन-बल गर्वित कृत दुराचरण मनमानी।।
पृथ्वी नहिं सकीं सँभार भार अकुलानी।
कह त्राहि त्राहि रक्षा कुरु सारँग-पानी।।
पृथ्वी की सुनी पुहार बिष्णु इमि बागा।
सतयुग का हुआ जब अंत तिरेता लागा।।१।।
मेरी प्यारी पृथ्वी तू मत घबरारी ?।
आता हूँ बन अब परशु राम अवतारी।।
यमदग्निपिता मम होवें रेणुका माँ री !।
करूँ छत्रबंधु सब नाश धीर धर प्यारी।।
'मौक्तिक' प्रभुवच सुनि भू चित धीरज पागा।
सतयुग का हुआ जब अंत तिरेता लागा।।२।।

❋ तर्ज राधेश्याम ❋

यमदग्निऋषी के औरस से, रेणुका जठर में प्रभु आया।
साक्षात् वीर रस ही मानो, सुन्दर साधू बनकर आया।।

❋ दोहा ❋

शोभित कंध कुठार वर, महा धनुष कर माँहि।
माथे तिलक त्रिपुंड्र का, नयन सु दीरघ आँहि।।

शुक्लपक्षशशि-कला इव, शीघ्र बढ़े भृगुराम।
वेद शास्त्र सत्वर पढ़े, नाम परशुधर राम ॥

काँधे पर खासा कल कुठार, और करमें महाधनुष लेकर।
दिग्विजय हेतु भूमंडलपर, निकले मन महा मुदित होकर ॥

* चौ० तु० कृ० रा० *

बरबस नीति नृपन समुझावहिं। नहिं माने तेहि परशु देखावहिं॥
बड़ आतङ्क परशु को छायो। गर्वितनृप भृगु वश में लायो॥
व्यतिरिक्त परशु के सात पुत्र, रेणुका मातु के औरभि थे।
सातों ही सिद्ध तपोधन थे, निर्वेदिन में सिरमौर जु थे॥

अति दविष्ट महि अटन हित, गे इक दिन जब राम।
पाछे जो अनरथ भयो, सुनु मारण चित थाम॥

इक कार्तवीर्य नामक राजा, जो परशुराम का मौसा था।
इस सार्वभोम नृप के सुत का, मीनो शुभ नाम कलेशा था॥
महाराज कुमार कलेशा के, गौत्री कलेशिया मारण हैं।
इस उक्त गौत्र की उत्पत्ति का, यह ही प्रधान इक कारण है॥
इस कार्तवीर्य राजा का ही, दूसरा नाम सहस्त्रार्जुन है।
तीसरे सहस्त्राबाहू भी बतलाते इसको बुधजन हैं॥
यह एक दिवस चतुरंगिनि लै, मृगया करने उस वनमें गया।
जिसमें यमदग्नि तपोधनजी, बसते सँग लै रेणुका प्रिया॥

* दोहा *

गैंडे-वाघ-बराह-मृग, हने नृपति हर्षाय।
क्षुत्तृट-व्याकुल ह्वै कहा, परिचर एक बुलाय॥

देखो यहँ से कुछ दूरी पर, मुनि यमदग्नी का आश्रम है।
तुम सत्वर जाकर लै आओ, मेरे हित थोड़ा सा जल है।

राजज्ञा पा चर विदा हुआ, मुनिराज से जा पानी माँगा।
संक्षेप में सारा परिचय भी, मुनिराज से परिचर ने वागा॥
समदृक् मुनि बोले प्यासे तो, सैनिक हाथी हय सब होंगे।
इसलिये नृपति युत सब समाज, कृपया मम साढु अतिथि होंगे॥
लिख दिया निमंत्रण पत्र रुचिर, चेला लै नृप ढिंग जा पहुँचा।
नृप भी पढ़ करके अनी सहित, कौतुक वश आश्रम आ पहुँचा॥
यह कार्तवीर्य, मुनि अजमतसे, अब तक बिल्कुल वंचित सा था।
इस अनअधिकार चेष्टा पर, नृप को अहमति कौतुक सा था॥

मुनिने आवाहन किये, सुरतरु-सुरभी आज।
सत्वर आ ठाढ़े हुए, क्या आज्ञा मुनिराज॥

बुलवाया हमको किस निमित्त, आपका कौन प्रिय कार्य करैं।
संभव नृप अतिथि आपके हैं, इनका स्वागत सत्कार करैं॥

जीहां महिपाल कार्त्तवीर्य, मेरे संबंधी साढ़ू हैं।
ये मुझको प्यारे वैसे ही, पकवान में जैसे लाडू हैं॥

तुम्हरे ही भरोसे पर हमने, इन राजेश्वर को नेवता है।
पूजा वैसी होनी चहिये, जैसा कि असल में देवता है॥

※ गाना ※

भूप नृप सहस्त्र बाहू ने, क्षणिक में दृश्य क्या देखा।
महान्तम स्वर्ण मंदिरमें, स्वयं को इंद्र सम लेखा॥
छत्र चामर लिये अभि से, खड़ी रंभादि नारी हैं।
कई को हाथ से उबटन, नृपति अपने करत देखा॥
करा अभिषेक बहुमूल्य, वसन-भूषण से सज तन को।
कल्पतरु-पुष्पकी-माला, पिन्हाते आपको देखा॥
विविध व्यञ्जन अमी सदृश, बना सुस्वाद राजो चित।
उन्हें मनुहार बहुकर कर, जिवाँते आपको देखा॥

चमकती स्वर्ण झारिनमें, अमीइव आचमन हित जल।
नृपति उन देव रमणिन कर, से पीते आपको देखा।।
पड़े पर्यंक मणि गुम्फित, छिड़े कल-कंठ से गाना।
उर्वशि आदि पातुर सँग, रमण करते स्वयं देखा।।
यथा आनँद मिला नृपको, तथा उपलब्ध सेना को।
अजी मौक्तिक गजाश्वनको, प्रचुर आनन्दमें देखा।।

❋ दोहा ❋

देख ऋषीकी सिद्धता, छका सहस भुजराय।
योगशक्ति के सामने, राजशक्ति है जाय।।

बनमें मुहिं स्वर्ग भुगाई दिया, कौपीन–कमंडल वाले ने
शाबास वह पलमें छीन लिया, कौपीन–कमंडल वाले ने।
वह भी मुझही न अकेले को, प्रत्युत मम सेना-सागर को
निशिभर सुरपति सम विभव दिया, है साधुवाद मुनि नागर को
साढ़ू-प्रदत्त अद्भुत विलास, अहमति तू निशिभर भोग सका
चक्कवै स सैना होते भी, मुनि के छीनते न रोक सका।
इत्थं विचार करते करते, सहस्रार्जुन आश्रम में पहुँचा
यमदग्नी को अभिवादन कर, अनुनययुत उनसे यह पूछा।
मुनिराज कृपा करके कहिये, इस अचरजका रहस्य क्या है?
पहुनाई किस प्रकार मेरी, करदी तुमने कौतुक सा है।

❋ गाना ❋

सुनहु सहस भुजराय यह कौतुक सुरतरु सुरभी का।
हुआ अतिथि सत्कार कार यह है इन उभ ही का।।टेक।।

करैं सिद्ध यग याग, सुनो नृप इनकी अनुकंपा।
करैं इन्द्र सम भूप चहे कोइ कितना ही रङ्का।।

कहा सहस भुजराय, मुनी सुरतरु अरु सुरभी को।
कछु दिन के प्रीत्यर्थ हमें, मांगे दीजै इनको॥
कहा मुनी ने अहो भूप, अधिकार न यह हमको।
मेरे हों तो जाउ लिवा ये धन है इन्दर को॥
सरल-सत्य-मुनि बात, कुटिल ग्रनि नृप कह रे कपटी।
मौक्तिक बरबस छीन लेउ, उभयन इमि कह दुष्टी॥
इतना कहकर खड्ग से, काटा मुनि का शीश।
सातपुत्र पितुहित लड़े, सोऽपि शिष्य सह खीश॥
कामधेनु अरु कल्पतरु, यह अनरथ अवलोक।
अति सत्वर ऊपर उड़े, गही राह सुर–लोक॥
अति क्रोधित नृप दुष्ट ने, छोड़े इन पर बान।
कामधेनु का कर्णकट, गिरा मही पर आन॥
कामधेनु दुख पायकर, दिया भूप कहँ शाप।
छत्रबंधु अब शीघ्र ही, होगा तेरा—नाश॥
कामधेनु के कान की, जग में हुई तमाल।
कर्ण–रक्त को महावर, जिसे लगाती बाल॥
साध्वी मुनितिय रेणुका, लखि पति पूत विनाश।
ऊँचे स्वर डकरा रही, परशुराम की आश॥

दूसरे रोज अपराहूण सयय, श्री परशुराम निज घर आये।
तो इन्हें निजाश्रम अवयव सब, निज कुटुँब-रक्त-रंजित पाये॥
श्री पूज्य पिता की गरदन से, इक रक्त–धार सी बहती है।
जननी के युगल नेत्र मानों, वर्षा की बने उलेती हैं॥
आश्रम की तपोभूमी सारी, वहाँ छिन भिन हुईं नष्टसी हैं।
मुनि-दंड कमंडल हवन कुंड, सब चीजें रक्त से भ्रष्ट सी हैं॥
कुछ चेले जो गुरु हेत वहाँ, रणभूमी में थे लपक लड़े।
कतिपय वीरोचित गति पाये, कतिपय घायल हो-२ के पड़े॥

कुछ भागगये जो कायर थे, कुछ प्रस्तुत भी जो मन के कड़े।
वे अब भी रेणु का माता की, सेवा में सबके सब हैं खड़े।
उनके समझाने पर भी वह, रेणुका शांत नहिं होती है।
अनवरत जेष्ठ सुत परशुराम, की वाट मातु वह जोहती है।

* माता के पास आकर परशुरामजी गद्‌गद कंठ से कहते हैं *

तात् तात् हा भ्रात पुकारी। परशुराम में व्याकुल भारी॥
माता जी प्रस्तुत खड़ा, तब समक्ष यह राम।
कहु जननी किसने किया, पितु आश्रम शव धाम।

* दीनकवि की कविता से संगृहीत अथ क्षेपक *

लखि आये परशुराम को निज धरि सँभारा।
बस रोकली फौरन ही प्रवल अश्रु की धारा॥
समुझा के कहा पुत्र लखो हाल हमारा।
राजा के प्रवल वीरों ने है इनको संहारा॥
मैं अब तो जलाती हूँ सती धर्म से काया।
सोचो कि तुम राजा ने तुम्हें कैसा बनाया॥१॥

(२)

मारा है पिता माताको है रांड बनाया।
इस शांति भवन ठौर को शोणित से सिंचाया॥
बटुकों को सताया तुम्हें पितु हीन बनाया।
सुख शांति का दाता सभी गो वंश छिनाया॥
क्या ऐसे अधम भूप से डर जाउगे प्यारे।
तब कैसे कहाओगे भला मेरे दुलारे॥२॥

(३)

निज राज्यका मद साधु जनों को है दिखाता।
लघुबालकों को जो है जनक हीन बनाता॥

अबलाओं की विनती नहीं कुछ ध्यान में लाता।
है वस्त पराई जो जबरदस्ती छिनाता॥
जो ऐसे अधम भूप के आतङ्क से डर जाय।
वह रेणुका पुत्र हरे! आज ही मर जाय॥३॥

(४)

तर्पण मुझे दरकार नहीं तीर्थ के जलका।
पिंडा नहीं दरकार गया-धाम के थलका॥
करना न कभी ध्यान मेरी ओर टहल का।
आतङ्क सुना चाहती हूँ मैं तेरे बलका॥
मंजूर अगर हो मेरे प्राणों को रिझाना।
तो मेरी चिता रक्त की धारा से बुझाना॥४॥

(५)

निज रक्त के आधार से है तुमको रचाया।
निज दूध के आधार से है, तुमको जिलाया॥
निज गोद के आधार से है तुमको बढ़ाया।
निज सीख के आधार से है वीर बनाया॥
इन बातों के बदले हो अगर मुझको रिझाना।
रिपु रक्त की धारा से चिता मेरी बुझाना॥५॥

(६)

इक्कीस दफा पीट के निज हाथ से छाती।
निज पुत्र परशुराम को माँ बैन सुनाती॥
होती है सती रेणुका पति प्रेम में माती।
संसार की आँखों को यह दृश्य दिखाती॥
पतिशोक में वीरा नहीं निज तन को जलाती।
जल-२ के है रिपु वंश में इक आग लगाती॥६॥

* दोहा *

इस प्रकार सुतको सिखा, माता गइ सुरलोक ।
परशुराम ले परशु इत, पहुँचे रिपु के ओक ॥

रिससे अति मूर्च्छित हो बोले, पितु घाती होशियार हो जा
भ्राता-वटुकों के संहारी, मरने को अब तयार हो जा
मम बेकस पितु-भ्राता गण की, बोली हत्या तेरे सिर पर
इसलिये तू झटपट बिस्तर कस, हो जा तयार और जा यमपुर
मरने से पहले प्रण सुनले, पितु खून का यों बदला होगा
इक्कीस बार यह जगती तल, क्षत्रियन रहित बिल्कुल होगा
इतना कह सिर के बाल पकड़, पहले तो सहस भुजा छाँटी
पुनि दायें पद की मूल सहित, भार्गवने एक जँघा काटी

* दोहा *

अब शेषित इक पद पकड़, खूब भ्रमा भृगुनाथ ।
अंब चिता उपशांति हित, फेंका बल के साथ ॥
पड़ा रेणुका की चिता, के समीप नृप जाय ।
सत्वर आ भृगुनाथने, फरसा दिया चलाय ॥

सिर काट सहस्रा बाहूका, तज्जनित रक्त से चिता बुझा
संध्या तर्पण से फारिग हो, भार्गव जी करने लगे गिजा
तब तक टीड़ी के दल जैसा, क्षत्रिय समूह ह्वाँ आ पहुँचा
श्रीमान् सहस्रार्जुन का सुत, वर वीर कलेशा आ पहुँचा
निष्कर्ष यही इस भाँति वहाँ । अगणित छत्रिय अवहान हुये
फरसे रूपी उस तीरथ में । कर समर सभीं बलिदान हुये

* दोहा *

दो बालक इस युद्ध में, बच भागे लै जान ।
परशुराम पीछा किया, ले कुठार और बान ॥

कहते हैं ये दोनों बालक, इक द्विज के आलय में प्रविशे ।
हा त्राहि त्राहि!हा त्राहि त्राहि!!,हा त्राहि माम् द्विज वर रक्षय ।।
भय से कातर इन बच्चों को, द्विज ने छाती से लगा लिया ।
सम्यक् विधि आश्वासन देकर, दोनों को घरमें छिपा लिया ।।
कुछ क्षणमें परशुराम आये, बोले पंडितजी बाहर आ ।
ममरिपु क्षत्रिय सुत द्वौ तव घर, प्रविशे हैं उनको बाहर ला ।।
उनको निज तीक्ष्ण फरसे से, बस अभी यहाँ बलिदान करूँ ।
किंचित संतोष तभी होगा, हे द्विज जब उनका प्राण हरूँ ।।

※ ब्राह्मण ने अपने मनमें यह विचार कर कि ※

※ चौपाई तर्ज तु० कृ० रा० ※

भूत दया सम धर्म न भाई । निरपराध-वध सम अघ नाहीं ।।
अस बिचारि द्विज बोल असाँचा । नहिं मम घर क्षत्रियसुत नाथा ।।

※ तर्ज राधेश्याम ※

मेरे औरस से ब्राह्मणि ने, हे राम तनय त्रय जाये हैं ।
तीनों मेरे औरस सुत हैं, क्षत्रिय-सुत यहाँ न आये हैं ।।

※ परशुराम जी क्रोध से ताते होकर ※

※ गाना ※

ऐ महीसुर झूठ तू क्यों बोलता ? ।
छत्रि मेरे शत्रु हैं दिल खौलता ।।
प्रण मेरा क्या कान से द्विज नहिं सुना ।
सर्व जगतीतल करूँ क्षत्रिय बिना ।।
इसलिये ला शत्रु सुत नहिं कर कपट ।
अन्यथा तब घर करूँ द्विज चपरगट ।।

ब्राह्मण बोला भावै जु करो, प्रभु से न हमारा चारा है।
यदि ब्रह्महत्त्या ही करना है, तो काटो शीश हमारा है॥
पुनि ब्राह्मणि सिर छेदन करिये। अथ काटो सिर तीनों सुत का।
इस प्रकार अपने फरसे से। कल्याण करो ब्राह्मण कुल का।
श्री परशुराम विस्मित होकर। बोले तो द्विज विश्वास दिला।
द्विज बोला बेशक हां अवश्य। कृपया कहिये किस भांति भला।

* परशुरामोवाच *

तीनों पुत्रों के हाथों से, पहले कच्चा भोजन बनवा।
पुनि एकपात में तीनों सँग, मेरे समक्ष तू भोजन खा॥
द्विजने हो परम प्रसन्न तुरत, सुत त्रय से भोजन बनवाया।
पुनि चारों ही ने मिलकर के, वह एक पात्र ही में खाया॥
यह है शरणागत वत्सलता, शरणागति हो तो ऐसी हो।
मारण यह है सच्ची रक्षा, ऊँची मति हो तो ऐसी हो॥

यह चरित्र लखि तुष्ठ हो, चले गये भृगुनाथ।
ब्राह्मण रक्षित तनय त्रौ, ब्रह्मणावत प्रख्यात॥
इस प्रकार भृगु नाथ से, नित क्षत्रिय संहार।
देखि २ सब छत्रियन, बढ़्यो अतङ्क अपार॥

तीक्षण कुठार उकसाहि कहैं, कस्त्वम् ? "बतला छत्रिय है ना ?
उत्तर मिलता है नहि भगवन्, मैं नहि क्षत्रिय नहि, हूं मैं ना।
कैसे नहि है तू क्षत्रिय है, मुझसे कहता छल पुत बैना।
उत्तर कातर स्वर से नहि मैं, नहि मैं छत्रिय नहि हूं मैंना॥
बस ठीक इसीपर भार्गव ने, उन मृषा कथक रजपूतों की।
इक जाति स्वतंत्र बना डाली, मैंना नाम्नी रजपूतों की॥
पुनि जल तर्पण तिथि कायमकी, कार्तिक की असित चतुर्दशिको।
इस दिन सब मैंना हो निरस्त्र, सर-सरि तट जावें तर्पण को॥

बस वही जाति इस भारत में, मैंना मीना प्रख्यात हुई।
मेना मीनोत्तम मीनावत, इन नामों से विख्यात हुई ।।
इनका है असल गौत्र कश्यप, और जाति वरण छत्रिय सज्जन।
जिनमें इष सित अष्ठमि नवमी, दशमी को होत खड़ग पूजन ।।
कार्तिक कृष्णा चौदश को ही, बद्री नारायण आश्रम पर।
संवरण करी निज इहलीला, श्री परशुराम जी ने तप कर ।।
चौदह तिथि तर्पण-स्वीकृत कर, मीणा निज राज्य गवाँ बैठे।
इस अंध धर्म को आश्रित कर, रिपुओं के हो शिकार बैठे ।।
इक्कीस दफा क्षत्रिय रहिता, महि करदूं यह प्रण पूर्व किया।
पुनि अंध धर्म तर्पण सिखला, कतिपयका कर अवसान दिया ।।

इस प्रकार जब हो गया, क्षत्रिय कुल संहार।
शासन में तब देश के, होन लगा अविचार ।।

यह देख मंत्रदृष्टा मुनियों, ऋषियों ने एकत्रित होकर।
मंत्रणा करी अर्बुद गिरिपर, अन्वेषिय कोउ क्षत्रिय मुनिबर ।।
बोले श्री परशुरामजी ने, की इतिः श्री क्षत्रिय कुलकी।
कहँ खोजिय ढूंढा मिले नहीं, विन क्षत्रिय यह जगतीतल की ।।
कोई बोले सारे न मरे, उनमें से कतिपय प्रस्तुत हैं।
भयके वश मृषा कथन कर जो, मैंना संज्ञा से संजुत हैं ।।
पुनि क्या था उसी जाति के श्रुति, मानव मुनियों ने बुला लिये।
वे अग्नी होत्रादिक द्वारा, संस्कारित क्षत्रिय बना लिये ।।
इन अग्निकुली शाखोत्पन्न, पुरुषों से इसी मीन कुल में।
सहस्त्रों शाखा निर्गत्त हुई, मारण तब इसी मीन कुल में।
जैसे चौहानों से चीता, बड़ गोती-गोठवाल आदिक।
पुंवारों से डाभला जगर, नौरावत-दूल्हावत-ताजिक ।।
पेहखा सपावत-पहलावत, रोइंदे-मचाव जम्मूरे।
रावत मैंना सहस्त्र शाखा, संगर वालादि गुनहु रूरे ।।

इस प्रकार तवँरों राठारों-गहलोत, चंदेले नेपालो से।
शाखांयें निर्गत सहस्त्रों है, जैसे परिहार पडयारों से खड़ह्यारों से॥

* देखिये निरुक्त में यास्क मुनि क्या कहते हैं *

मेहना महनीय पूजार्हम्, ऐसा निरुक्त बतलाता है।
इनका अपभ्रंश रूप ही बस, मेंना-मैंना कहलाता है॥

वैदिक शब्दों के निघंटु की, व्याख्या में यास्क मुनी लिखते।
महना महत्वेन श्रुतिः कोर्थ, शुद्धरु महान स्थविर लिखते॥
महना का ही अपभ्रंश रूप, मैंना अरु मीना जँचता है।
संभव मत्स्यथ पटेल मात्र की संप्रति पदवी महता है॥

पोथी अपनी में लिखा, कविवर गोगा राव।
उसका भी कृपया जरा, अवलोकन करजाउ॥

* गंगाजी के ग्रन्थ से उद्धृत *

'नरपति' पाट मीणों निरमाण, गमोश्वर किधौं आदिज भान।
प्रथम रचियों मेरु कलेश, मीना प्रति गौत्र एताह मिलेश॥
चौहारता में सूं दश हज्जारा गोताण,
पडिहारा में सूँ चार हज्जारा प्रमाण॥
तवँरा तीन हज्जारा गौत, उपजे भेम सब मिलये सौत॥
गहलोता पांच हज्जारा सुभार, पंवारा पाँचसौ रु पाँच हजार।
जादू पति राम आधाम-२, हज्जारा चार अरु पांचसौ गाय॥
रघुपति कूरम है अघात, मिहिरा गोत मिले हज्जारा सात।
बड़गूजराँ दोइ हज्जारा मवेस, राठौरा एक हज्जारा आवेश॥
चंदेला आठसौ एक हज्जार, गिणी-२ गोत करै कवि जहार।
पाँच हजार गोत्र निर्माण, नैपाला तीन हज्जारा प्रमाण॥
मीणा शुरू आदि हुँ गोत्र अपार, अब करूँ गोत्र तणो उच्चार॥

※ मीना उत्पत्ति शिव पुराण के अनुसार नारद विष्णु संवाद

※ दोहा ※

मारण वीरों अब सुनो, शिव पुराण की बात ।
मैंना उत्पत्ति विषय का, नारद विधि संवाद ॥

नारद बोले कहिये भगवन्, सारी सृष्टि जो तुमसे हुई ।
उसमें मैंना जाती उत्पत्ति, कहिये कब कैसे किससे हुई ॥

विधि बोले तुम सहित मम, पूत अठासि हजार ।
तिनमें साठ सुता जनी, मम सुत दक्ष भुआर ॥

नृपने सत्ता इस शशि को दी, कतिपय कश्यप ऋषि प्रवरो को
अवशेषित स्वधा नामनी इक, कन्या उद्वाही पितरों को ।
उस स्वधा नामनी देवी ने, पुनि यथा समय अति रूपवती ।
त्रय कन्या प्रसव करीं सत्वर, मैंना धन्या अरु कलावती ॥
शशि कला समान बढ़ी तीनों, सब विद्या में परवीण हुई ।
इकदिन नारायण दर्शन हित ये श्वेत दीप में तीनु गईं ॥
कर प्रेम से स्तवन श्रीहरि का, विष्णोन्मुख बैठ गई तीनों ।
उस समय सनातन सनकादिक, मुनियों ने तहाँ गमन कीनों ॥
कौमार अवस्थामें शश्वत, रहने वाले मुनियों को लख ।
व्यतिरिक्त तीनु इन देवीं के, परनाम किया सबने उठ उठ ॥
इनकी धृष्टता से चिढ़ करके, मुनियों ने इनको शाप दिया ।
तुम इसी पाप से मृत्यु लोक, जाकर होवो मानवी तिया ॥

※ दोहा ※

मुनि का भारी शाप सुन, अब जूँ रेंगी कान ।
अति शंकित मुनि पद गिरीं, त्राहि संत भगवान ॥

मुनि राज क्षमा करिये हम तो, तीनों विष्णों प्रणिधान में थीं ।
इसलिये त्वदीयम् आवभगत, हमसे न हुई अनजान में थी ॥

*** चौ० तु० कृ० रा० ***

शाप अनुगृह कहिये गोसाई। द्रवित हृदय तब कह मुनिराई ॥
यदपि असत्य न गिरा हमारी। तदपि अकनु मम वचन कुमारी॥
जेठी मैंना मृत्युलोक जा। होंहि हिमाचल शैल भारजा ॥
मैंना जठर उमा अवतारा। होंय पाप ते जावै पारा ॥
अपर पुत्र शत जनैं कुमारी। नाम मैंनाक परम बलधारी ॥
धन्या जनक सु प्रिया सुनैना। सीय प्रसव करि पावै चैना ॥
कलावती बरसाने ग्रामा। श्रीं वृषभान की हुइहैं वामा ॥
याके जन्मैं कीर्त किशोरी। शाप पाश यह या विधि तोरी ॥
शाप अनुग्रह इमि मुनि कहिगे। पुनि सत्वर अंतर्हित हुइगे ॥

*** दोहा ***

कालांतरमें देवि त्रय, मानुषि कर अवतार।
जेठी मैंना को भयो, तुहिनागिरि भरतार ॥
मैंना के शुभ जठर ते, पार्वती अवतार।
अपर एक शत पुत्र भे, नाम मेनाक उदार ॥

इन मैंनाकों की संतति ही, भारत में मैंना कहलाई।
यह शिवपुराण की कथा रुचिर, मौक्तिक मीना उत्पत्ति गाई ॥
इन राजकुमार मैनाकों ने, वहु नाग वंशि कन्याओं से।
उद्वाह किया पुनि सागर तक, वसुधा भोगी सद्न्याओं से ॥

गिरिजाके इन सौ भ्रातन से, पूरे सौ ही कुल प्रगटाये।
वे ही इस भारत के अंदर, मैंना अरु मीना कहलाये ॥

*** मीना क्षत्रियों के प्रति कतिपय विद्वानों का मत ***

कतिपय शास्त्री विद्वानो का, मिन् छत्रिन के प्रति मत यह है।
ये यदुकुल में होने वाले, प्रद्युम्न–मदन वंशः धर हैं ॥

अनिरुद्ध-उषा ते ऊषारा, बस उषा जननि समझो इनकी।
मैंनालय देश के अन्तर्गत, थी रजधानी बूंदी इनकी॥
श्री मदन के वंशज होने से, ये मैंना-मयन संज्ञा पाये।
प्रद्युम्न वंशधर होने से, मदना-मैंना ये कहलाये॥
इनके द्वारा स्थापित सुदेश, मैंना वाड़ा-मैंनालय है।
मैंनाल भि वहि कहलाता है, यह लिखते टाडमहोदय है॥

●

इति श्री जगन्नाथात्मज मौक्तिक राम दर्भ (डाभजा)
परमार मारण क्षत्रिय सीमल खेड़ी
वास्तव्य विरचित मीनायणे
उत्पत्ति सोपान
॥ समाप्तम् ॥

नृप सोपान

★

✻ श्लोकाः ✻

सर्वानन शिरो ग्रीवः सर्वभूत गुहाशयः ।
सर्व व्यापी च भगवान्ज्ञानरूप मीनेश्वरः ॥१॥
सर्वतः पाणि पादोयं सर्वतोक्षि शिरोमुखः ।
सर्वतः श्रुतिमांल्लोके सर्वमावृत्यतिष्ठति ॥२॥
सर्वेन्द्रिय गुणाभासर्वेन्द्रिय विवर्जितः ।
सर्वस्य प्रभुरीशानः सर्वस्यशरणम् सुहृत् ॥३॥
एकोपि त्रीनिमाल्लोकानि बहुधा शक्ति योगतः ।
विदधाती विचेत्यन्ते विश्व मादौमिनेश्वरः ॥

मोन. पु. प्र. चतुर्थ अ.

✻ दोहा ✻

मीनायण में चौथवाँ, यह नृप कांड ललाम ।
जिसके पढ़ने से मनुज, हो आयुर्बल–धाम ॥

भूपों की गाथा पढ़ने से, नर नीति–दक्ष हो जाता है ।
सच भी है नृपका नीति तत्त्व, बस तभी समझमें आता है ॥

✻ दोहा ✻

साम–दाम पुनि दंड अरु, भेद चारगुण व्यंग ।
नर्मकथा-रण कुशलता, पढ़ो भूप के अंग ॥

* मीनेश आवाहन गाना *

★

मीनों वाले माधव जी!
मीनों के हित लौट के आ ॥

मीने तेरे क्या भये जी ! आके कुछ इनको बता ॥ टेक ॥
बाधा नृप तक तुम्हरी संतति हती सभ्यता वारी ।
बाद शनैश्वर लागो याहे वनगइ पूरी ग्वाँरी ॥
गाने भद्दे रसिया गावें मैंनी संतति सारी ।
मौक्तिक डूबी मैंना नैया सुधि लो मीन मुरारी ॥
आओ ना अति लाघव जी मीनेश तू कहाँ है छिपा ॥ मी. वाले

* मीना राजा मयूरध्वज (मोरध्वज) *

* दोहा *

विक्रम नृपते पूर्व इक, मौर्य नाम कर राष्ट्र ।
मौर्यवंशि नृप तहाँ के, मीन छत्रि उपशाख ॥
अस्य वंश नृपकी कथा, भक्तमाल के माँहि ।
मीनों मिलती है हमें, सुनो ध्यान दे ताहि ॥
अति उदार इस वंश के, नृप मयूरध्वज जान ।
दानान्वेषण हित बने, नृप याचक भगवान ॥
मीनेश्वर का जब हुआ, श्री कृष्णा अवतार ।
अर्जुन इस अवतार में, रहे सखा-सरदार ॥

* चौपाई तर्ज राधेश्याम *

नृप धर्मराज और मोरध्वज, दोनों ने एक समय ही जब ।
कर अश्वमेधका सूत्रपात, यज्ञीय अश्व युग छोड़े जब ॥
घोड़े का संरक्षक अच्छा, इत कुँवर वीर ताम्रध्वज था ।
उत धर्मराज का अनुज वीर, अर्जुन बरिबंड कपिध्वज था ॥

विधिवश आपस में दोनों दल, मिलगये भयानक मार हुई।
अर्जुन दल सहित हुआ मुच्छित, छिनगया अश्व और हार हुई ॥
ताम्रध्वज दोनों घोड़ों को, लेकर पहुँचा पितु की नगरी।
भक्तों भक्तों के झगड़े में, क्या करिये सोचत बैठे हरी ॥

* दोहा *

मुरमर्दन आये प्रथम, मूर्च्छित जन के पास।
बाँह पकड़ बैठा किया, कहा पार्थ शाबाश ॥
बड़ी डींग तुम मारते, अपने बलकी यार।
पाँच बरस के बाल ते, हार गये धिक्कार ।!
अर्जुन बोला धन्य है, तुमको लीला धाम।
कहलाते हो व्यर्थ ही, तुम जन के आराम ॥

अर्जुन की शान किरकरी जब, दुर्धर्ष शत्रु से हो जाये।
आदत यह सदा तुम्हारि रही, पीछे जन को रोने आये ॥
अपमान सहित जग में जिंदा, नहिं केशव मुझको रहना है।
निभ गया सखा पन आजतलक, जाइये हमें तो मरना है ॥

* दोहा *

कहा कृष्ण अर्जुन सखे, इसमें वश नहिं मोर।
दृढ़ प्रतिज्ञ तुमसे अधिक, अहहिं तात नृप–मौर ॥
मीन वंश नृप मौरध्वज, दानिन में शिर मौर।
तन मन धन से भक्त मम, उससा जगति न और ॥

* अर्जुन बोला *

पाँचो भाई नारियुत, कृष्ण-२ रट लाहिं।
रातदिवस सेवा करैं, तौभी यश कछु नाहिं ॥

अब दान शीलता देखना है उस मीन वंशि मौरध्वज की।
कितनी तितिक्षुता सहन शक्ति, उस धीर वीर ताम्रध्वज की ॥

* गाना *

दिखादो दानिन का शिरमौर।
कन्हाई मानहु मोर निहोर॥
दिखादे दानिन का शिर मौर॥ टेक॥

कृष्ण कहा यदि ऐसी इच्छा,
जौं नृप भक्त की लेहु परीक्षा।
भिक्षुक का हम भेष बनावें चलु जंगल की ओर॥१॥
हरि-अर्जुन इमि मंत्र दृढ़ाई,
अपने तनमें खाक रमाई।
जङ्गल से इक नाहर पकड़्यो आये नृप की पौर॥२॥
अतिथि साधु लखि हर्ष्यो राजा,
धन्य भाग्य मोरे प्रभु आजा।
भोजन करिये संत गोसाईं विनय करौं कर जोर॥३॥
संत कहै सुन रे नृप राई,
अति भूखो मेरो वनराई।
प्रथमैं याको भोजन दीजै, तब हम करि हैं कौर॥४॥ दिखादे०
कह नृप या हित अज मँगवाहीं,
संत कहै यह अन्न नहिं खाई।
नृप तो क्या पुनि मृग मँगवाऊँ, कह द्विज सुनु कर मौर॥५॥
तव सुत ताम्र केतु कर मांसू,
नृप रानी चीरो बिन आँसू।
निज हाथों लै सिंह हिं डारो, तब हम करि हैं कौर॥६॥ दिखादे०

* दोहा *

वचन नहीं थे संत के, वज्रपात था एक।
जिनके सुनते हीं नृपति, बिलकुल हुए अचेत॥

सँभले पर सँभला ही न गया, पुनि वज्र हृदय करके सँभले।
बोले केहरि हित सुत पहले, मुझको मम अथ रानी को ले॥
सुत पाँच बरस का बच्चा है, उससे केहरि क्या धापेगा।
पितु जननी पूरब सुत वधते, क्या जगतीतल नहिं काँपेगा॥

* साधू बोले *

यह ठीक है चाहे कुछ भी हो, यदि गृही धर्म तू रखता है।
याचक का द्वार ते हो हताश, जाना यदि पाप समझता है॥
तब कुछ भी हो उदार राजा, सरवर निज पुत्र ताम्रध्वज को।
राजा रानी मिलकर चीरो, पुनि डारि देहु मम नाहर को॥
भूखे हैं हम तीनों प्रानी, भारी कर आश यहाँ आये।
देना हो तो स्वीकार करो, वरना नट, कहीं अनत जायें॥

* दोहा *

जो आज्ञा कह संत से, चला भूप पछतात।
मां बेटों की महल आ, सुनी इस तरह बात॥

वार्त्ताः—जिस समय महाराज मीनवंशावतंस मौरध्वज रनवास में पधारे उस समय राजकुमार अपनी माता से पिता के धर्म-संकट की बात इस प्रकार कह रहा था—

* गाना *

* लेखक कथन *

धर्म सङ्कट तात का जब सुत सुना।
मातु ढिग जा हाल विधि पूर्वक भना॥
धर्म संकट में पड़े कुंवर अति तात हैं।
तुम जु पोचो तो सु बिगड़ी बात है॥

द्वार तेरे साधु द्वौ इक सिंह है।
सिंह हित माँगे जननि मम अंग है ।।
धन्य है मम भाग्य अवसर स्वर्ण है।
केहरी हित चीर मोहिं रखु—पर्ण है ।।

✻ पुत्र से माता का वचन "गाना बहरतवील" ✻

✻ बहर तवील ✻

धन्य हो २ दानी धर्मात्मा बेटा क्या कह रहा-मात से ये वचन। मैं नहीं दूँ नहीं दूँ तुझे सिंह हित, दे के निज माथ रक्खूंगो तुझको सुवन ।।

✻ वहर तवील पुत्र वचन ✻

ठीक है यह कथन तेरा पर मातज्-सिंह को अन्य का सर न दरकार है, वह फकत-मेरे प्राणों का भूखा है माँ ? मुझको चीरो न क्षण की करोऽबार है ।।

✻ स्नेह से कातर प्रगट होकर महाराज मौरध्वज का वचन ✻

✻ बहर तवील ✻

भूप बोला क्या होगा न अन्याय यह, मेरे रहते तजें प्राण सुत नारि हैं, धन्य लख्तेजिगर-धन्य रानी तुझे, धन्य भक्ति तुम्हारि की वलिहारि है ।। हाय ! वेवश हूँ बेवश प्रभो ! क्या करूँ, गति साँप छछुंदर केरि हुई, सन्त हट्ट पड़े न सुनें वीनती, सिंह के वास्ते मुझको लेते नहीं ।।

✻ ताम्रध्वज का पिता से कथन ✻

✻ बहर तवील ✻

ऐ पिताजी ! लखहु ज्ञान की आँख ते, यह परीक्षा समय आ उपस्थित हुआ। तात् नास्तेव—नास्तेव ये साधु हैं, संत के रूप मीनेश भिखारी हुआ ।। चूको अवसर तो भरपेट पछताउगे,

मुझको चीरो-पिता जल्दी चीरो पिता !! योग युक्ति से प्राणों को सहस्त्रारमें लूँगा अपने चढ़ा सोच है अन्यथा ॥

*** दोहा ***

योगी नृपने पुत्रका, लिया योगबल जाँच ।
रानी-सुत सह आगये, नहीं साँच कहँ आँच ॥
बोले अब आज्ञा करो, चीरें सुत को नाथ ।
साधू बोले हां नृपति, धरी करौती माथ ॥

*** छन्द ***

पति ते कठिन हिरदय किया, सुत सिर करौती धर दई ।
अपने ही लख्ते जिगर की, निज हाथ फाँकें कर दई ॥
दहिनी को उठवा भूप ते, निज सिंह को डलवा दई ।
वाई को रानी हाथ से, रनवास में पहुँचा दई ॥

*** चौपाई तर्ज राधेश्याम ***

साधू बोले धन्य हो भूप, सामान अशन का लाओ अब ।
भूखे हैं साधू अर्से से, इसलिये न देर लगाओ अब ॥
भोजन उपकरण सभी सत्वर, नृप ने संतों के अदा किया ।
बात की बात में संतों ने, निर्मित खाने हित गिजाँ किया ॥

*** दोहा ***

बड़े संत ने लघू से, कहा सुनहु महाराज ।
पाँच पत्तरी में परस, जल्दी जाहु विराज ॥

वार्त्ता:—अब बड़े संत का राजा मोरध्वज से भोजन करने के लिये कहना—

*** बहर तवील ***

संत बोले बड़े ऐ जी ! दानी नृपत, अपनी रानी सहित सुत के आओ यहाँ । आप तीनों के आये-बिना भूपजी ! संत पायें भोजन कभी ना यहाँ ॥

* अति दुखित होकर राजा का वचन *

* बहर तवील *

भूप बोला महात्मा गजब क्या करो, पुत्र तो खेलने दूर देशों गया। आप पाइये भोजन बड़े प्रेमसे, हाय ! करते हैं क्या ? आप हठ यह नया ॥

* पुनः सन्त वचन *

* बहर तवील *

ऐरे दानाभिमानी नृपति मान तज, चढ़ो ऊँचे-अटारि पुकारो सुवन। अन्यथा संत दै के सुशाप तुझे, नृप भूखे ही यहाँ से करेंगे गमन ॥

* राजा का ताम्रध्वज कुमर को पुकारना *

* बहर तवील *

संत का हुक्म पा भूप ऊँचि अटा चढ़कै आओ कुमर-आओ लख्तेजिगर। संत रूठे हैं भोजन हा ! करते नहीं, वेग आओ मनाओ जिमाओ कुमर ॥

* बहर तवील *

तात की हाँक का जल्दी उत्तर दिया, जी हां आया पिता ! जल्दी आया पिता !! आप बैठे अशन हित सु माता सहित, दोनों संतों सहित मैं भी आया पिता ॥

* बहर तवील *

डूब अफसोस के सिंधु में भूप गे, उर्ध्व से हेठ महलों के आये नृपत, द्वार से अश्व युत आता लख्तेजिगर देखा छाती से अपने लगाया नृपत ॥ रानी अपने कलेजे का टुकड़ा निरख, प्रेम के अश्रु मोचत लला से मिली, कछु क्षण के लिये कलि मुरझाई जु वह मीनेशपायात् सत्त्वर खिली ॥

* बहर तवील *

सत्य की मूर्ती तीनों जन को निरख, पार्थ के सह हरी ने कहा धन्य हो। आज से सौ गुने फिर भी हों धर्मवां, भक्तिवां, भुक्तिवां शक्तिवां मान्य हो ॥

अपने राजा को देकर के वरदान यों, प्रेमसे फिर अशन पान सब सह किया। बाद को मीना जाति का मीनेश हरी, पार्थ के सह तिरोहित पलक में भया ॥ मीन पुराण भूमिका पृष्ठ ५१

* मीना राजा चन्द्रगुप्त मौर्या (३२५ ई० पू०–३०० ई० पू०)

* दोहा *

मीना महिपति दूसरा, चंद्रगुप्त विख्यात।
पुरावृत्त इस भूप का, सुनहु मीनकुल जात ॥

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० की भाँति *

मौर्यबंश कर संतति तंतू। चंद्रगुप्त नृप शक्ति अनंतू ॥
मुरा नाम मैंनी क्षत्रानी। नृप की मां पितु नंद बखानी ॥
यह नृप महानंद कर बेटा। सौतेला औरन ते जेठा ॥
महाप्राज्ञ नीतिज्ञ विचक्षन। आठ विमात्रबंधु नृप के सुन ॥
आठौं पितु सह अंतर द्वैषा। चंद्रगुप्त ते रखैं हमेशा ॥

* दोहा *

रूप देश के शाह ने, महानंद नृप पासु।
लोह पींजड़े बंदकर, सिह प्राकृतिक आसु।

* तर्ज राधेश्याम *

भेजा कहलाया हे सजन, यह सिंह निवेधित तुमको है।
पिंजड़ा अभिरक्षित रहे निपट, निकले हरि आशा हमको है ॥
आठों पुत्रों सह महानन्द, कर–२ बहु यतन हताश हुआ।
पिंजड़ा तोड़े बिन पंचानन, क्योंकर निकले यों निराश हुआ ॥

* दोहा *

महाप्राज्ञ शशिगुप्त तब, पिंजड़ा लिया सँभाल।
कर प्रयत्न निज बुद्धि से, केहरि दिया निकाल ॥

* दोहा *

ज्यों का त्यों पिंजड़ा तुरत, भेजा अनुचर हाथ।
शाहे संदेशा लिखा, यह तो लघ सी बात ॥

विस्मित हो शाह रूम के ने, दूसरी वार अति हो विह्वल।
धधकती आग की अंगीठी, सरसों का थेला इक मृदुफल ॥
दूतों ने महानन्द नृप ढिग, जाकर यह सामग्री धरदी।
पुनि सविनय हाथ जोड़ करके, उत्तर हित नम्र विनय करदी ॥

* महानन्द का मंत्री तथा सुतगण से परामर्श लेना *

बतलाओ सुतगण मंत्री गण, इन चीजों का क्या मतलब है।
निज-२ मति के अनुसार कहो, क्या उत्तर दें बोलो सब है ॥

सनाटा जब खिचगया, सारे ही दरवार।
चंद्रगुप्त तब खड़ा हो, कहने लगा भुवार ॥

धधकती अँगीठी अग्नी की, प्रेषक का क्रोध बनाती है।
सरसों इस बोरे की भूपति, अगणित सेना बतलाती है ॥
मित्रता हमारी का मृदु फल, यह फल का मतलव है राजन्।
घट भर जल-पिंजड़े भर तीतर, इक रतन अस्य उत्तर राजन् ॥

तीतर वीरों के बोधक हैं, चाहे असंख्य सेना तुम्हरे।
क्षणमें भक्षण कर जायेंगे, ऐसे हैं वीर यहाँ हमरे ॥

अगनी सम क्रोध तुम्हारा भी, जल नीति हमारि बुझा देगी।
तुम्हरी मित्रता का मृदुफल यदि, तो मणी हमारी बता देगी ॥
मतलब मणि ज्यों अमुल्य इकरस, तैसी मित्रता हमारी है।
विश्वास न हो तो कर देखो, पूजै सब आश तुम्हारी है ॥

* दोहा *

जल तीतर हीरा दिया, उत्तर में धर हाथ ।
पा कर शाह गद्गद हुआ, कहा धन्य नृप राज ।।
बड़ी प्रशंसा युत लिखा, धन्यवाद का पत्र ।
महानन्द तुमसा नहीं, प्राज्ञ विश्व में अत्र ।।

* दोहा *

धन्यवाद का पत्र पढ़, महानन्द महाराज ।
मुरा सुवन सम प्राज्ञ नहि, इस दुनियाँ में आज ।।
सोचा इसमें संदेह नहीं, सौतेला गद्दी छीनेगा ।
मेरे पीछे मेरे औरस, पुत्रों को ताज नहीं देगा ।।

यदि मेरे जीते ही इसका, अस्तित्व यहाँ से मिट जाये ।
उत्तराधिकारी मेरे के, तब पाँव यहाँ जमने पाये ।।

* दोहा *

ऐसा मनमें ठीक दे, आठौं सुत बुलवाइ ।
चंद्रगुप्त ते द्वेष रखु, ऐसे दिये सिखाइ ।।
हित अनहित को जानते, पशु भी मारण भाय ।
चंद्रगुप्त इस रहस्य को, ताड़ गया अतुराइ ।।

कितने दिन पीछे महानंद ने, एक यज्ञ आरंभ किया ।
उसमें इक द्विज चाणक्य नाम, का इस नृप ने अपमान किया ।।
उसकी भीषण शाप्युक्ती से, नृपनन्द सुतों सह नाश हुआ ।
उसके पीछे यह चंद्रगुप्त, मौर्य मगध का नाथ हुआ ।।
पटना को रजधानी करके, यह मीना नृप नृपराट हुआ ।
नृपनीती दलबल शक्ती से, उत्तर भारत-सम्राट हुआ ।।
(मीन पुराण भूमिका पृष्ठ ५३)

* दोहा * (२७३ ई० पू० २३२ ई० पू०)

मीना राजा तीसरा, बिन्दुसार विख्यात् ।
मौर्य्य गौत्र शशिगुप्त था, इसका प्यारा तात् ।।

शशि गुप्त के उत्तर अधिकारी, ये विंदुसार नृप पटना हैं ।
इन मीना नृपके शासन में, बरती न अधिक कोई घटना है ।।
कारण नृप चंद्रगुप्त जी ने, सुतहित दृढ़ नींव जमादी थी ।
इनके शासन अंदर फलतः, उठ सकीं न कोइ उपाधी थी ।।

मीन पुराण भूमिका पृष्ठ ५४

★

* दोहा * (२७३ ई. पू. २३२ ई. पू.)

चउथे नृप इस वंश के, हुये अशोक महान ।
मीन वंश अवतंस बुध, नीति कुशल विद्वान ।।

* तर्ज तुलसी कृत रामायण की भांति चौपाई *

चउथे मीना नृपति अशोका । बौध धर्मरत शुभ गुण ओका ।।
तिनकी प्रथम लीक भूपन में । बुद्धिमान बलभृत ज्ञानिन में ।।
नृपकर परिचय वर्णन वैसे । रवि हि दिखाव दीप कोउ जैसे ।।
सुधि निर्मित बहु उतँग स्तूपा । धर्म प्रचारन हित नृप रोपा ।।
काशी सॉची इत उत जगती । शिला निबंध स्तूप हैं संप्रति ।।
यह नृप बौध धरम अनुयायो । स्तूप अछत नृप कीर्ति स्थायी ।।
अति उदार सच्चरित भुआला । राजनीति मर्मज्ञ विशाला ।।

* दोहा *

उत्तर कैकेय देश ते, दखिन उदधि लौ राज ।
अफगानों के देश ते, पूर्व असाम तक राज ।।

* तर्ज राधेश्याम *

नृप सार्वभौम इस अशोक का, उत्तराधिकारी दशरथ था।
यह राज योग्यता में पितु से, सबही विधि न्यून बहुत कम था॥
दशरथ के मरने के पीछे, इसका नाती गद्दी बैठा।
इस तरह पाँच नृप और हुये, पुनि पुष्य मित्र नृप हो बैठा॥
बृहद्रथ मुराड़िया की हत्या, सेनापति पुष्यमित्र ने की।
इसने भोगा कुछ दिन नृप पद, आखिर को स्वर्ग यात्रा की॥
मीन पुराण भूमिका पृष्ठ ५४, ५५

* दोहा * (ई. सन ७६३-७६१)

मीना राजा पाँचवाँ, मानमौर महिपाल।
बप्पा स्वस्त्रिय ही बना, अस्य भूप कर काल॥

यह कृतघ्न बप्पा पहले तो, विप्रों के ढोर चराता था।
पीछे यह नृप चितोर होगा, मारण यह किसे पता क्या था॥
जब भाग्य रेख उघड़ी इसकी, यह भ्रमता गढ़ चितोर आया।
विधि वश नृप मान मौर जी ने, इस ठग कुपात्र को अपनाया॥
भानजा बना अपना इसको, जीविका तथा जागीरी दी।
सद् असद् पात्र की जाँच न की, अति शीघ्र सिपह सालारी दी॥
अघ अनल-कृतघ्न-शत्रु रुज को, जो नृप लघुमर कर मानता है।
मीनों इसमें संदेह न तब, नृप नीति नहीं वह जानता है॥
जब साम-दाम और दंड-भेद, का जिस नृप को है ज्ञान नहीं।
तब उसको निज रजधानी में, है अधिक समय प्रस्थान नहीं॥

* दोहा *

राजा-मंत्री-सुहृत अरु, कोष-प्रजा-गढ़ जान।
सेना-पुरकेलोगसब, राज अङ्ग बसु मान॥

आठ अङ्ग युत भूप जो, रहै सदा नीरोग।
तो वह नृप वहुकाल तक, करै राज्य श्री भोग॥

सेना की शक्ती बाप्पा को, जब मामाजी से प्राप्त हुई।
सेवक से स्वामी बनजाऊँ, इसको यह इच्छा आप्त हुई॥
अपनी बुद्धी से शनै शनैः, सातों अङ्गों को वश करके।
चित्तोर नाथ बनगया बप्प, नृप मानमौर का वध करकै॥
बस मुराड़िया मीनाओं से, इस प्रकार गढ़ चितौर छूटा।
भोलापन-अंधधर्म-मदिरा, अपनाने से यों करम फूटा॥

(मीन पुराण भूमिका पृष्ठ ५६, ५७, ५८,
प्रमाण देखो य. रा. भा. १ अ. २ में)

* दोहा *

मीनाराजा षष्ठमा, आलनसिंह महाराज।
रजधानी खोहगङ्ग में, राजहिं सहित समाज॥

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० की भांति *

चंद्रवंश को चरम भुआला। आलनसिंह नृप परम दयाला।
तिनते खोहगंग रजधानी। छीनी तेज करण अघखानी॥
दूल्हराय अस्य उपनामा। उक्त भूप यहि खल कर मामा॥
मातुलपन नृप सत्य निभायो। यह नृप प्रति बाँह अहि प्रगटायो।
यहि कृतघ्न की उत्पति ऐसे। अपर सुनहु संगति भइ जैसे॥

* कृतघ्न ढोलाराय की उत्पत्ति *

निषध देश नृप सोढा रावा। एक समय इक सुत उपजावा।
दूल्हराय नाम नृप राखा। याहि क्वचित् ढोला अपिभाषा॥
एक अयन को भो जब ढोला। यहि पितु शीश काल तब बोला॥
राजतख्त चाचा कर आयो। ढोल जननि तब अस मन आयो॥

* सोरठा *

बुरा राज्य का लोभ, मम देवर सुत कहँ वधै।
जननी उर अति क्षोभ, अस विचारि सुत ले भगी॥

* दोहा *

कङ्गालिन के भेष में, सुतहिं गोद लै भाग।
एकाकी कोशों चली, पश्चिमदिशि महाभाग॥

* चौ० त० राधेश्याम की भाँति *

प्रथम तो रही यह महारानी, तिसपर भी महिला–अबला थी।
सैंकड़ों अनुचरी–अनुचर से, सेवित थीं कुसुम–कौमला थी॥
क्यों इतनी दूर की मंजिल, वह काहे कभी चली होगी।
कुश–कंटक वाले मारग में, क्यों भूख पिपास सही होंगी॥
यह सबहि मोह की महिमा है, मोह का फंद ऐसा ही है।
गृहस्थी अथवा विरक्त इसमें, पड़ कर तो मृग जैसा ही है॥
शृंगी–जार्जलि–नारद इसमें, फँस–२ कर अति दुख पाये हैं।
सुत-मोह-फंद ने ही यहाँ पर, रानी को कष्ट सहाये हैं॥

* दोहा *

अस्तु नगर खोहगंग बहिः रानी सुतहिं उतार।
क्षुधा-क्षाम हो विपिन में, खोजन लगीं अहार॥
बदरी-फल चुन-२ भरा, कंगालिनने—पेट।
पुनि त्वर दौड़ी आगई, जहाँ रहा सुत लेट॥

देखा तो शिशु पर एक सर्प, फन फैला छाया करता है।
बच्चा सुख से आराम सहित, मीठी निद्रा में सोता है॥
यह दृश्य देख शिशु की माता, बस एक बारगी सहम उठी।
आखिर ठहरा माता का हृदय, वह चीत्कार कर घोर उठी॥

रक्षाहित रोने चिल्लाने, जब कंगालिन यह छिप्र लगी।
आरत पुकार सुनकर आया, वहाँ पर इक ब्राह्मण विप्र यज्ञी ॥
तब तक वह तक्षक चला गया, द्विजसे दुखिया ने हाल कहा।
सुन घटना द्विज ने धीर बँधा, बालक का भविष्य बखान कहा ॥
मा शुचः मा शुचः महाभाग, महिपाल त्वदीयम् सुत होगा।
तुम्हरे नीके दिन आवेंगे, नहिं वचन मदीय असत होगा ॥
ऐ प्रौढ़े! यहाँ से खोहगङ्ग, यह सीधा मारग जाता है।
नृप चूड़ामणि मीनाऽऽलनसिंह, पुरपति महिपाल कहाता है ॥

❋ गाना ❋

भूप आलनसिंह बड़ो नृप साधु री !।
वहाँ गये तेरी कहै सब व्याध री ! ॥१॥
दिन फिरेंगे वहाँ तेरे कछु दिन बसे।
जाहु बेटी पुत्र युत रहियो खुशे ॥२॥
सुत तेरो स्यानो जबै होइ जाइ यह।
याद रखियो नीति तजन न पाइ यह ॥२॥
अन्यथा अपमृत्यु तन त्यागैं अघी।
हस्त में ऐसी सुनहु रेखा लगी ॥

ब्राह्मण के वचनों को सुनकर, कंगालिन उर धीरज आई।
खोहगंग शहर में आकर इक, नागरि से रानी बतलाई ॥
हे बहन नमस्ते चरणों में, पुनि नम्र निवेदन आप से है।
दुखिया हूँ पूर्ण अनाथा हूँ, सम्बन्ध न पति-मां-बाप से है ॥
हौं स्वर्ग खसी पृथ्वी रोकी, जगती में मेरा कोई नहीं।
यह बालक सो भी जनक रहित, निर्वाहक मेरा कोइ नहीं ॥
अहसान तेरा भारी होगा, तू इस पुर के राजा के ह्याँ।
दासी का स्थान दिला मुझको, रोजी मेरी लगवादे माँ ॥

** दोहा **

पिघल गया इसका हृदय, सुन दुखिया के बैन ।
इसको अपने साथ लै, आई नृप के ऐन ।।
एक देश ते हाल सब, नागरि दिया सुनाय ।
महारानी ने कर कृपा, दासी लीन्हि बनाय ।।
आलन सिंह की मृत्यु का, अंकुर फूटा आज ।
नागिन नागिन-सुत उभौ, महलों गये विराज ।।

इक दिन दासि नवागंतुक से । रानि अशन बनवायो हित से ।।
यह अपि कुशल अशन कृत भारी । रहीं भला राजा की नारी ।।
अति लाघव कीन्हेसि सब व्यञ्जन । तिन्हैं खाइ नृप भये मुदितमन ।।
पूछा अशन कौन निर्मायो । भोजन माहि स्वादु बहु पायो ।।

** दोहा **

महारानी ने विनय युत, नई दासि ने आज ।
बुलबाओ उसको कहा, आलन सिंह महाराज ।।
तुरत भूप के सामने, खड़ी करी यह बाल ।
नृप बोला तू कौन है ?, सत्य सत्य कह हाल ।।

वह बोली अशरण शरण प्रभो !, हे मीन वंश अवतंस नृपत ? ।
मैं नरवर-पति की रानी हूँ, मम अङ्कमाल यह उनका सुत ।।
नृप सोढाराव के मरते ही, देवर ने सुतका हक छीना ।
सब विधि अनाथ हमको करके, निर्वासन कर अति दुख दीना ।

** कव्योवाच **

जब पिघले हुए नेत्रों से, दुखिया यों निज गाथा गाई ।
जिसको सुन खोहगङ्ग-पति की, स्वजनों सह छाती भर आई ।।
पहले तो निर्बल धीरज धर, जुल्मों को सहता रहता है ।
जब शरण्य अपना पाता वह, तब दुख आँसू बन बहता है ।।

जब शरण्य उसको गले लगा, उसकी दुख दशा पूछता है।
तो वर्णन पहले शरणागत, अति फूट-२ कर रोता है॥
बंध जाती हिलकी पर हिलकी, दुख कथा न वरणी जाती है।
रोता रहता है विसुक बिसुक, वाणी गद्‌गद हो जाती है॥

* दोहा *

अति उदार भूपाल ने, कहा बहन तजु शोक।
दासीपन अब त्यागकर, सहर्ष वसहु मम ओक॥

तेरा सुत मेरा भागिनेय, है सब प्रकार सुनरी भगनी।
मानूँगा भगिनी ही करके, करि साख कहूँ दिनकर अगनी॥
इतना कह नृप आलन सिंह ने, उन महाभाग माँ-बेटों को।
रहने हित एक सुभग मन्दिर, बस बता दिया इन हेटों को॥
दोहित्र की स्याना होने पर, निज सुत इव शिक्षा दीक्षा की।
जीविका के हित कुछ जागीरी, देकर निज प्रण की रक्षा की॥

★

* दोहा *

मीना भूप मुराड़िया, गौत्री मौराँ नाथ।
तिसकी कन्या मुरौनी, का ढोला के साथ॥

करवाया पाणि-ग्रहण नृपत, मीना पुङ्गव आलन सिंह ने।
अपने प्रति दूध पिला पाला, वस्तुतः यह अहि आलन सिंह ने॥

* दोहा *

तवँर वंश-अवतंस नृप, अनँगपाल विख्यात।
सम्प्रति दिल्लीनाथ भे, सब नृप मान इतात॥

भारत के सब ही नृप इसको, शक्त्यानुसार कर देते थे।
उस काल का था सम्राट यही, इसकी आज्ञा में रहते थे।

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० की भाँति *

मीना राजा आलन सिंह ने । अति विश्वास पात्र गुन मनमें ॥
चौश जमा करने हित ढोला । कछु सैनिक दे दिल्ली बोला ॥
राज विभव लखि अनँग नृपति को । चित-चंचल दूल्ह दुरमति को ॥
पाँच बरस दिल्ली में रहकर, दूल्ह भयऊ सुधूर्त्त धूर्त्त वर ॥
हे विधि कथम पाऊँ सिंहासन । किमि मैं कहलाऊँ महाराजन ॥
विधिवश आलनसिंह बारहठा । मिलेइ नीच कहँ हितु अति हेठा ॥

* दोहा *

दूल्ह ने बारहठ को, सव विधि वश कर लीन्ह ।
निज अभीष्ट की पूर्त्ति हित, दान मान बहु दीन्ह ॥
नृप होऊँ इस लगन में, सोचत दूल्ह राय ।
इसी समय बारहट आ, बोला शीश नवाय ॥

* बारहट काव्योवाच *

भानेज राज का यश अखंड, कुछ दिनसे क्यों दुचिताई है ।
निर्भय हो दिल का हाल कहो, तजि कै हुजूर सकुचाई है ॥
मैं तनसे मनसे औ धन से, सब विधि से हितू तुम्हारा हूँ ।
नृप आलनसिंह का होते भी, वस्तुत मैं दास तुम्हारा हूँ ॥
कारण नृप पदवी पाकर भी, तुम सा आलन सिंह कभी नहीं ।
याचक गण जिससे तुष्ट न हो, ऐसा यजमान पसंद नहीं ।
गादी पर खोगँग की ईश्वर, भाणेज सा मन आलन सिंह का ।
होवै तब निश्चय भाग्य खुलें, खोहगङ्ग शहर को रय्यत का ॥
इस गूढ़ अर्थ पर भागनेय, यदि बुद्धिमान हो तो चित दो ।
मैं हितू आपका सभी तरह, इसलिए खुलासा सब कहदो ॥
अधिकृत सुपात्र के मिलने पर, गुप्य से गुप्य प्रगटा जाता ।
मैं अधिकारी जन आपका हूँ, क्यों भागिनेय शङ्का खाता ॥

* बारहठ से दूल्हराय कहने लगा *

मामाजी मेरे लिये आप, अन्तर्यामी भगवान् से हैं।
मुझ डूबत गज के कृष्ण हो तुम, या यों कहिये जलयान से हैं ॥
क्या नहीं जानते रहे आप, शिशुपन अनाथ जैसे बीता।
अब काबिल नृप के होते भी, हूँ निपट राज्य श्रीं से रीता ॥
अब वह ही यतन करहु मामा, जिससे मातुल आलनसिंह का।
वध करके मैं महिपति होऊँ, उनकी रजधानी खीगँग का ॥
लेकिन मामा आलनसिंहजी, रहते सतर्क हुशियार सदा।
मीना नृप-रक्षक मिन क्षत्रिय, रखते सकाश हथियार सदा ॥
जय पाना मारण क्षत्रिन पर, लोहे के चने चबाना हैं।
अपनी अपमृत्यु बुला करके, यमपुर को धाम बनाना है ॥

* बारहठ कव्योवाच *

* दोहा *

कथन यथारथ आपका, है यह राजकुमार।
मीना छत्रिय वीर वर, यद्यपि समर जुझार ॥

पर कितना दुर्जय दुर्ग कुंवर, भेदीं द्वारा तोड़ा जाता।
पवि जैसा कठिन यंत्रिकाभी, लघु चाबी से खोला जाता ॥
मद स्रवते मतवाले गज को, लघु अंकुश वश कर लेतो है।
वैसे ही थोड़ी सी भेषज, भीषण गद को हर लेती है ॥
छोटे २ मंत्रों के वश, इंद्रादि सकल सुर हैं भाई।
मम वचन श्रवण कर भागिनेय, तज देनापोशी कदराई ॥
दश वदन सरीखा सार्वभौम, भेदिया विभीषण ने मारा।
पुनि इन्द्रपुरी सी लङ्का का—सुर दुर्लभ सुख भोगा सारा ॥
पौराणिक गाथा को सुनकर, भाणेजराज हिम्मत करलो।
जैसे अब मातुल पर विजय, पाओगे गुप्त भेद सुनलो ॥

कार्तिक की कृष्ण चतुर्दशि को सब चंद्रवंशि क्षत्रिय मारण।
नृप युत निरस्त ह्वे पुर बाहर, जाते हैं पितृ यजन कारण॥
शम दम यमादि से विशुद्ध हो, सर में सब कटि प्रयन्त जलमें।
उस काल चहे कोई आवै, वे ध्यान न अपना भङ्ग करैं।
क्या कहूँ विशेष शत्रु से भी, उस समय न प्रण तजि जंग करैं॥
यह मौका है वध करने का, आसान राज पाजाओगे।
एवं अम्मावस को ही तुम, खोह गंग धीश हो जाओगे॥
अब कहों अभीष्ट पूर्त्तिपर, इस उपकारी को क्या देंगे।
सुनिये नरेश सब गुर्गों में, हम तुमसे ऊँचा पद लेंगे॥

दोनों भुज अपने उठा, करौं मैं प्रण कविराय।
सबसे ऊँचा पद तुम्हैं, दूंगा मैं हरषाय॥

अच्छा निर्दिष्ट उक्त तिथि पर, तुम सूसज्जित होकर आना।
मैं भी व्हाँ पर प्रस्तुत हूंगा, दिल धोखा नेक नहीं लाना॥

इस प्रकार बहु सौख्ययुत, बलिपशु ह्वै बारहट।
वधिक सु दूल्हराय के, रहा कंधपर बैठा॥

जब कालनिशा आई समीप, विधि इच्छा खोह गंग आया।
अपने के साथ–२ सबका, खल मृत्यु टिकट लेकर आया॥
कार्तिक की असित चतुर्दशि को, आलनसिंह तर्पन के कारण।
भाई बेटों उमराव सहित, आये पुर बाहर सब मारण॥
सब काम क्रोध मद लोभ छौड़, निज अस्त्र शस्त्र कर परिवर्जन।
आँखों को अर्द्धनिमीलित कर, सब लगे पितृजन के तर्पन॥

इसी बीच में काल का प्रेरा दूल्हराय।
आ पहुँचा भल दाँव पा दीन्हेसि कत्ल मचाय॥
आलनसिंह कह भानजे, यह न छत्रि कर धर्म।
विरम विरम पापी जरा, मत कर कायर कर्म॥

इस पितृयज्ञ की पूर्त्ती तक, तू शांति हमारी भङ्ग न कर।
पित्रों के कव्य समर्पण तक, रे छत्रबंधु तू जङ्ग न कर ।।
दूल्ह ने कहा क्षमा करिये, तकदीर से मौका पाया है।
मामाजी समझो कुटुंम सहित, बस काल तुम्हारा आया है ।।
इस अंध धर्म की सजा तुम्हें, देने विधि ने मोहिं भेजा है।
चढ़ धर्म पोत पर संयमनी, जाओ कुछ कहना बेजा है ।।
पितृव्य हमारे ने छीना, ममपितु हक हुई अनीती है ?।
भानेज न चूकै मामा से, यह ही हमरे कुल रीती है ।।

ऐसा कह कर दुष्ट ने, कीन्हेसि खड्ग प्रहार।
काटि भूप के शीश को, दिया जलाशय डारि ।।

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० *

नृपके अपर सजाती भ्राता। तवँर सेन ते भये निपाता ।।
कह दूल्ह अब वीर सुधावहु। शव बटोरि तट ढेर लगावहु ।।
दूल्हराय अनुशासन पाई। सैनिक घुसे जलाशय माहीं ।।
वाण-वेद-श्रुति-मेदिनि शव कर। ढूह लगायो सरवर तट पर ।।

इसी समय बारहट कवि, आया गाल फुलाय।
अम्मावसके भूप जी, दो ऊँचा पद भाय ।।

दूल्ह बोला जी हाँ अवश्य, स्वामी द्रोही ऊँचा पद लो।
ऊँचा पद लेने से पहले, दो बात हमारी भी सुनलो ।।
रे पाप-कुबुद्धे-कुजाति तू, जब निज प्रभु का नहिं सगा हुआ।
तब मेरा क्या होगा पापी, तू भी यमपुर जा भगा हुआ ।।
तूने अपमे अन्दाताका, कर दिया अंत लोभी होकर।
संभव मेरा अपि काल बने, कपटी तू चित क्षोभी होकर ।।
ऐसा कह डूमराज का सिर, ढोला ने धड़ से भिन्न किया।
ऊँचापद देने का निज प्रण, शव ढूह पे रख सम्पन्न किया ।।

दूल्हराय ने इस तरह, सन् वसु-चष (११२८) महि गाम।
खोहगंज्ञ ढूढार दोउ, छीनेसि मौक्तिक राम॥
पति पुत्रों का जब सुना, भीषण हत्याकांड।
निज कवि ही इसमें बना, अघ कलंक का भांड॥

बनकर तुषार लालच के वश, पड़गया मीन क्षत्रिय कृषि पर।
पर को नाशै मरजाय स्वयं, खलरीती सत्य कही ऋषिवर॥

आलनसिंह प्रासादमें, रुदन हुआ अति घोर।
बिलपत मिन वीरांगना, चलीं जलाशय ओर॥
निज-२ पति सिर गोद रखि, बैठीं चिता बनाय।
चंद्रवंश की नागरी, शशि पुर पहुँची जाय॥

जाते-२ आलनसिंह की, रानी हंता पर कोप उठी।
आवेश में आकर इस प्रकार, दुःखोद्‌गार कर प्रगट उठीं॥
सुकृत करते मम प्राणनाथ, को जिस पापी ने मारा है।
वह भी नाशेगा अति सत्वर, यह भारी शाप हमारा है॥
पुनि धर्म राष्ट्र हमरे कुलका, नाशक जो यह बारहठा है।
इनको जो चंद्रवंशि मीना, माने उसका दिन हेठा है॥

सति कर भारी शाप सुन, शंकित दूल्हराय।
गिड़गिड़ाय चरणों गिरा, कहा पाहि हे माय॥

रानी ने सोचा जब पति ने, पुत्रों ने अपर मीन गण ने।
सुकृतकाले नहीं शांति तजी, बलिदान हुये न तजा प्रण ने॥
मैं भी उस कुल की महिला हूँ, मुझको भी धर्म पर मरना है।
भारी कृतघ्नता की खल ने, आखिर को क्षमा ही करना है॥
यदि घोर शाप देदूँ इसको, तो सत्य में बाधा आयेगी।
पति से मिलने में यह बाधा, मुमकिन है रोक लगायेगी॥

* गाना *

क्षमा करती हुई दूल्ह को दूल्ह मातुली बोली ।
अहो दुष्टात्तमा कृतघ्न, सुनो तुम कान निज खोली ।।
क्षमा अपराध सब तेरा, नाम गुड़वाय सति मेरा ।
मानना मुझको कुलदेवी, कथा होली सो खल होली ।।
ताज-गद्दी मैं चाँदों की, तुझे देती हूँ लै लोभी ।
तू उनके देवि-देवों को, स्वकुल सुर समझ अघ चोली ।।
सिवा इसके सुनहु खल, तुम तुम्हारे राज अधिकारी ।
पती मेरे के वंशी के चरण अंगुष्ठ लै—रोली ।।
तिलक अपना करावेगे, तभी कल्याण होवेगा ।
अन्यथा नष्ट हो शासन, यही सतिया बचन बोली ।।

इस प्रकार अभिशाप दे, वह शक्ती गुड़वाय ।
चिता ज्वाल की लपट में, पिय ढिग पहुँची जाय ।।

इस अनरथ कारी घटना से, मिन प्रजा जोश में उभड़ गई ।
तौभी संगठन न्यूनता से, रिपु वध में वह नहीं सफल हुई ।।
अब बाँके मारण क्षत्रिन् ने, शाश्वती बगावत जारी की ।
हो गया नाक में दम रिपु के, ऐसी सु मोरचा मारी की ।।
उनकी शश्वत् रण धाँधलिसे, दूल्ह भयभीत हुआ भारी ।
मिन प्रजा शांत होवै ऐसी, इक गल्प घोषणा की जारी ।।
ऐ चंद्रवंशि मारण क्षत्रिन् शाबास है शक्ति तुम्हारी को ।
दूल्ह को क्षमा याचना दो, पुनि सुनहु पुकार हमारी को ।।
श्रीयुत नृप आलनसिंह जी की, यह पगड़ी मेरे शीश पे है ।
चाँदों की गद्दी सति द्वारा, जब मोंहि मिली वकशीश में है ।।
तव मैं हूँ नृप का दत्तक सुत, मुझको भी चंद्रवंशि समझो ।
तुम रहो यथा तथ पहले वत्, नहिं बात दूसरी कुछ समझो ।।

दूल्ह की बकभक्ति का, पड़ा प्रभाव अगाध।
मीना क्षत्रिन् ने किये, सभी क्षमा अपराध॥
भोले भाले मीन गण, सुकृति परम उदार।
दूल्ह के कर मंत्रणा, भूल गये अविचार॥

* दोहा *

मान लिया सब ने उसे, नृप आलन अधिकारि।
दूल्ह युत सबने बहुरि, सतिया वचन सँभारि॥

कृतघन बारहट के वंश धरों, का बहिष्कार जातीय किया।
पुनि डोम दमामी ढोल्यादी, उनको यह नीच खिताब दिया॥

* चंद्र वंश की शाखा *

मारण परमार चेदि कल चुरि, अरु हूण नाग तक्षक जानो।
चंदेले शेष अगनी आदिक, सब चंद्र वंश शाखा मानो॥

* चंद्र वंशी मीना क्षत्रिन् के बसाये नगर *

चाँदा चंदेरी चंद्रपुरी, और चंद्रवती चाँदन्न पुरी।
ये सब प्रचीन बसाइ हुई, शशि बंश मीन गण की नगरी॥
इस घटना के पश्चात् राज, दौसा का दूल्ह ने पाया।
माँची गैटोर झोट वाड़ा, कालीखो पुनः जीत लाया॥
यह सब ही शासन मिन क्षत्रिय, आपसी फूट से खो बैठा।
मदिरा से प्रेम खूब कर कर, अपना सर्वस्व गवाँ बैठे॥

* मीना राजा ४ नाथूराव *

माँच नगर का अधिपती, था नृप नाथूराव।
गौत्र शीहरा भूप का, पदवी थी महाराव॥
माँच नगर के कत्ल में, कपटी दूल्ह राय।
महा धूत कर कुटुँब सह, मारा नाथू राय॥

विधिवश इक पुत्र रावजी का, बच गया भाग निकला जिससे।
शीहरा वंश अवतंस है यह; शीहरी नाक रह गइ इससे ॥

*** मीना राजा रावमेदा ***

इसका था नाम राव मेदा, विद्वान् वाक् पटु था भारी।
ओजस्वी भाषण दे देकर, इसने जननी महि उद्धारी ॥

★

*** राम मेदा का वक्तव्य ***

भाइयों अपनी जन्मभूमि, सबको स्वर्ग से गरीयसि है।
मनुजों की कथा छोड़ दीजे,पशु-पक्षिन् कोऽपि प्रेयसी है ॥
वे भी जब इस जननी के प्रति, निज प्राण तलक दे देते हैं।
छिन गई तुम्हारी मातृ भूमि, तुमको तो सब नर कहते हैं ॥
प्राचीन समय से ऐ मीनों, यह मत्स्यप्रदेश हमारा है।
इसके सरि-सर इसके गिरिवर, इसका सर्वस्व हमारा है ॥
अस्माकम् आदि पुरुष मत्स्ये, हरि ने इसको आबाद किया।
अपने नाम से इसे प्रभु ने, शुभ मत्स्यप्रदेश प्रकाश किया ॥
कर विदीर्ण हल से क्षेत्रों को, जो बीज धरा में बोता है।
उसकी जमीन कहलाती है, उसका वहि स्वामी होता है ॥
किं बहुना इसके अधिकारी, हम ही है बात सत्य है यह।
नृपती तो हमारा चुना हुआ, शासक है कौन असत्य है यह ॥
राजा को यह अख्त्यार नहीं, जो रैयत पर अविचार करै।
अपहरण करै पुनि उसका धन, दुख देवे दुर व्यवहार करै ॥
राजा तो प्रजा का सेवक है, स्वामी हो कुशल न रह सकता।
यह राज्य आप लोगों का है, मैं मेरा कभी न कह सकता ॥
आप ही इसे अब लें सँभाल, बस मुझे राज्य का लोभ नहीं।
मैं तो रैयत रूपी होकर, रहना चाहता हूँ क्षोभ—नहीं ॥

मैंनी हिम्मत अन्वेषणका, यह समय उपस्थित सरदारों ?
इसलिये न हिम्मत को हारो, उठु छात्रधर्म निज संभारो ॥
यदि अस्मिन काले मिन क्षत्रिन्, भीरुता आप अपनाओगे।
तो निश्चय अपने पुरुषन के, यश में तुम दाग लगाओगे ॥
परतंत्र ह्वै जीवित रहने से, रण कर मरजाना श्रेयस है।
निज मातृभूमि इस माँची को, दुष्टों से छुड़ाना निश्चय है ॥

पांच पुश्त से माँच मां, रही सौख्य बहु पाव ।
आसा बीसा-जयवरा भौणा नाथूराव ॥

ये तन मन धन से माँची के, संरक्षक रह बलिदान हुये।
तुम सारा ज्ञान भुला करके, मारण क्षत्रिन् अज्ञान हुये ॥
यह धर्मयुद्ध है भ्रातृवर्ग, यदि इसमें विजय हमारि हुई।
तो समझो अभि से मातृभूमि, सुख संपत युत सुखियारि हुई ॥
यदि रण में मातृभूमि के हित, संभव है हम वलिदान हुये।
तोभी क्षर बपु हम त्याग त्याग,स्वर्गीबन अति महामान्य हुये ॥
पुनि अब क्यों डरें मृत्यु से हम, क्यों नशैं दास्यता में जीवन।
स्वाधीनी क्षत्रिन् की शोभा, इस तक ही क्षत्रिन् का जीवन ॥

★

❋ छन्द ❋

नृप राव मेदा का कथन, सच असर भारी कर गया।
सब मीन क्षत्रिय संगठित, जिससे हुये रण रच दिया ॥
दुर्वृत्त दूल्ह-पाप-घट बस पूर्ण ह्यांतक भर गया।
मांची सु मारण क्षत्रि करते, क्रूर मर यमपुर गया ॥
कांकिल जो दूल्हराय सुत, तिन बाप का बदला लिया।
नृप मीन पुंगव रावमेदा का इसी ने बध—किया ॥

* गाना *

देश मैंनाल अंदर गुजारा करूँ ।
सदा मीनेश मीनेश पुकारा करूँ ।।

पहाड़ आबू से लेकर के कालिंदी तक ।
देश मिनक्षत्रियों का है सुन्दर सुभग ।
अपना तन-मन व धन इसपे वारा करूँ ।।देश० १

अति श्रेयस् था मीनों का भुत्काल ह्यां ।
इससे बढ़कर भविष्ये हो मीनेश मया ।
वर्त्तमानी दशात्तम जो सारा–हरूँ ।।देश० २

देश नंगों के बस कैं रजक क्या करै ।
जहाँ श्रोता नहीं वक्ता व्हाँ क्या करै ।
कान वाले हों मिन यह पुकारा करूँ ।।देश० ३

अपनी मीना सी जाती की अब तो हरे ।
बिगड़ी हालत को सत्वर बनाओ हरे ।।देश० ४

'दर्भ इच्छा यही देश हित में मरूँ ।।

* दोहा *

कांकिल सुत मैंकुल भयो, माँची पति विख्यात ।
कालीखोः पति उस समय, चुहडदेव मिन जात ।।
मीना नृप वस्तुत दृढ़ प्रतिज्ञ, इसमें संदेह नहीं भाई ।
मैंकुल को चुहड़देव ने इक,इस तरह पत्रिका पहुँचाई ।।
धोखा दे कर तव पुरुषों ने, मीना नृप आलन जीता है ।
नृप वंश के पद अंगुष्ठ तिलक,करने,न पाप मिट सकता है।।
मम बायें पद अंगूठे से, मैंकुल जो निज अभिषेक करै ।
तो बिना युद्ध चूहड़ तुझको, अपना शासन उत्सर्ग करै ।।

प्रथम जोश में आगया, पढ़ खत मैंकुल राव।
पुनि कछु गुनि स्वीकृत किया, चूढ़देव-प्रस्ताव ॥
लोभी मैंकुल ने तिलक हेतु, बुलवाया काली खोः पति को।
उनने आकर बस उसी तरह, अभिषेक किया कांकिल-सुत को॥
मैंकुल प्रणरोप कहन लागा, आगे मम वंश जु नृप होंगे।
तेषामपि इत्थम मिन महिपति, अभिषेक-विशेषकादि होंगे॥
मैंकुल के ऐसे निश्चय पर, मिन नृप ने मदमाता होकर।
कालीखोः का संपूर्ण राज्य, मैंकुलैं दिया दाता होकर॥
मैंकुल को निज शासन देकर, नृप उसके रक्षक स्वयम् बने।
मैंकुल भी मिथः द्वैष तज कर, मिन क्षत्रिन ते अद्वयम् बने॥

* चौपाई *

मैंकुल वर्ग-मीन क्षत्रिन में। खानपान दुहिता अर्पन में।
भेद न उस काले था वस्तुत। टाड महोदय लिखा कथन ऋत।
क्षत्रिन कुल अरु मारण क्षत्रिन। एक भये मिलकर का पृच्छय।
लेकिन विषवेली अमृतफल, मीणों न कभी उपजाती है।
पड़जाती टेव बुरी जिसकी, वह कभी न मिटने पाती है।
खल से अनुनय नीच से प्रेम, कंजूस से धन आशा रखना।
इन तीनों से निज हित वैसे, आकाश कुसुम जैसे चुनना।
मैं तो कहता हूँ मीनों ने, इन रीछों के क्यों पद पकड़े।
इन व्याधों के वीणा मृग हो, धिक् मारण क्षत्रिय क्यों बिगड़े।
मीना महिपालों को पहले, सदअसद पात्र लखलेना था।
इस अन्वेषण के बाद ठौर, धोखे बाजों को देना था।
यह सत्य है विधि प्रतिकूलता पर, जेवरी साँप हो जाती है।
पितु यम समान मित बैरी सम, माता मृत्यू बन जाती है।
माहुर का फल देता पियूष, मृदु फूल शूल का काम करे।
ये सब विपरीत काम तब हो, जब जन से हो तू बाम हरे !।

* दोहा *

मीनाराजा शूरसिंह, मैंकुल समकालीन।
रजधानीं आमेर में, पालत प्रजा प्रवीन॥

बालाबाई नाम्नी रानी, नृप की थी परम सुशीला थी।
नृपराज सगुण हरि भक्त अगर, तो यह निर्वेदा महिला थी॥
जगतो के क्षण भंगुर सुख में, दम्पति का चित्त न रमता था।
तोर्थाटन सज्जन संगति में, दोनों का समय गुजरता था॥
नभगामिनि विद्या दम्पति ने, अम्बिका नाथ से पाई थी।
किंबहुना इनके प्रति प्रवास, यात्रा सु सरल सुखदाई थी॥
ये दृढ़ प्रतिज्ञ अति भारी थे, कहते है एक दिवस महिपत।
जगदीश के मंदिर में गमने, दर्शनहित ये नृप आस्तिक मत॥
नृप से पहले हरिदर्शन हित, मन्दिर में नृप-रानो आई।
दर्शन कर प्रत्यावर्त्तन पर, मन्दिर मुख भूप मिले आई॥
साड़ी अञ्चल अवगुंठित था, मुखसरोज बाला बाईका।
बिन पहचाने यह संबोधन, इनके प्रति था नृप राईका॥
वाई ! न डरो और निकल जाओ, राजा कुछ हटकर विरम गये।
रानी सुन विस्मित स्तब्ध हुई, आगईं महल बहु सोच हिये॥
पतिका संबोधन हरि इच्छा, अनुभव कर सोच सु त्याग किया।
पुनि मनहीं मन में बोलो अब, प्रभु ने वस्तुत वराग्य दिया॥

ऐ रानी बालाबाई तू, अब जाग मोह की निद्रा से।
मीनेश के भक्ति योग में तू, लगजाउ ज्ञान की मुद्रा से॥

भगवान् जिसे अपनी जानिब, लेता उससे संबोधन ये।
होते हैं चेत ! चेत !! 'बाला', जग विषय तु क्षणभङ्गुर हैं ये॥
प्रभुने नृपके उर में बस कर, संबोधन तुझ प्रति बाई का।
सो ठीक है चौथापन आया, अब भजन करो मिनराई का॥

मित्रता अविद्या से कर मैं, अपने को भूल गई वैसे।
मृग को निज नाभि सुगंधी का, कुछ भान नहीं रहता जैसे ॥
मैं शुद्ध हूँ बुद्ध निरञ्जन हूँ, मैं जगज्जाल परिवर्जित हूँ।
मेरा संसार तो स्वप्ना-है, मैं सच्चित् अंश-परात्पर हूँ ॥
मैं देह नहीं हूँ देही हूँ, मैं दृश्य नहीं हूँ दृष्टा-हूँ।
निर्दंभभावसे सद्ऽसद् का, हरि हित कर्त्ता और सृष्टा हूँ ॥
कर्मों के कारण जगती में, मैं ही तो नारी पुरुष बना।
बस अधिक और क्या कथन करूँ, चर-अचर रूप बन मैं ही भ्रमा॥
अब विषयों से विरक्त होकर, कुंडिलिनी शीघ्र जगाऊँ मैं।
षट चक्कर का भेदन करके, उन शङ्कर में मिल जाऊँ मैं ॥

ऋतु वसंत का समय था, चलीं सु त्रिविध वयारि।
सीतल-मन्द-सुगन्ध नर, काम बढ़ावन हारि ॥

ज्ञानी नृप शूरसिंह उर में, भवकेतु कुसुम सायक मारा।
कामार्त्त सु निज रानी मंदिर, नृप चले ज्ञान भूले सारा ॥

चन्द्रशाल आये नृपति, उठि तिय कीन प्रणाम।
बरबस हृदय लगाय नृप, कह सुनु मम प्रिय वाम् ॥

तेरे शशि वदन चंद्रमा पर, मम मन चकोर है बलिहारी।
ऐ प्रेम खजाने ! प्रेमी कहँ, रतिदान मान युत दो प्यारी ॥

महारानी ने बिहँस कर-कहा ठीक भूपाल।
इसके पहले नृप करें, हरि मन्दिर का ख्याल ॥

हरि दर्शन कर आवति कोउ तिय, तेहि मन्दिर द्वार मिले राई।
क्या किया था नृप ने संबोधन, उस अबला बाला के ताईं ॥
बस यही कि बाई डरो नहीं, यह सुन जोतिय अति सकुचाई।
वह ही महाराज की परम प्रिया, महारानी थी बाला बाई ॥

बाई कहते हैं बेटी को, बेटी सँग काम केलि वर्जित।
मीनेश की इच्छा है प्रधान, तुम दृढ़ प्रतिज्ञ नीके महिपति ।।
संसार के नाना सुख भोगे, वैसे भी चौथापन आया।
भानों को राज्यतिलक दीजे, मीनेश भजन अवसर आया ।।

काम-क्रोध-मद-लोभ नृप, चार नरक के पंथ।
भूलि न यहि मग पग धरै, सो है सच्चा सन्त ।।
रानी के इस कथन से, नष्ट हुआ नृप काम।
शूरसिंह नृप का हृदय, बना ज्ञान का धाम ।।

भानोरावसुत तुरत बुलाई। राज्य दीन्ह नृप नीति सिखाई।
आप रानि युत कानन जाई। सम्यक् विधि हरि भक्ति दृढ़ाई ।।
उभयऽष्ठाङ्गयोग नित सर्धाहि। तृण समजगत विषय अनुमानहिं।
सांख्य योग हरिभक्ति दृढ़ाई। सायुजमुक्ति अंत दोउ पाई ।।

* मीना राजा भानो राव *
* तथा कूर्म वंशी मैंकुलराव *

* दोहा *

शूरसिंह नृप बाद भे, भानों राव नरेश।
इनके शासन में प्रजा, पाई सौख्य विशेष ।।
सुकृति नृप पाकर भई, शस्य स्यामला भूमि।
अविचारी तस्कर हने, रवि नृप शासन घूमि ।।

अच्छा राजा अपना पाकर, रय्यत सब भाँति निहाल हुई।
ऐसी नीति से भानों की, देशों में कीर्ति विशाल हुई ।।
कांकिल-सुत मैंकुल लोभी से, नहिं सहन भानु परसिद्धि हुई।
आमेर को अपि धोखा देकर, लेलूँ उसकी यह बुद्धि हुई ।।
मिला एक दिन स्वयं वह, नृप भानों से आय।
वत वढ़ाव कर मिथ उभे, मित्र बने हर्षाय ।।

*** दोहा ***

भूला इसमें भानुनृप, मीणों इतनी बात।
अधिकारी अन्वेष कर, मित्र बनाइय तात्॥
मित्र बनाना हो जिसे, परखिय बार हजारि।
विपत कसौटी चार की, धृति-धर्म मित्र अरु नारि॥

अन्यथा सुनो मूरख सेवक, कंजूस भूप खोटी नारी।
धोखा देने वाला कुमित्र, मीणों ये शूलसम हैं चारी॥

*** सुमित्र के लक्षण ***

अपना दुख हो पहाड़ जैसा, उसको तो रज समान मानें।
निज मीत का दुख लवलेश मात्र, भी गिरि समान करिकै जाने॥
मित्र की प्रशंसा यत्र तत्र, विस्तारे औगुन भिन्न करै।
खोटे मारग से हटा उसे, सत्पथि सद्गुण सम्पन्न करै॥
आपद् काले सौगुना प्रेम, शक्त्यानुसार हित सदा करै।
लेने देने में किसी भाँति, शंका संदेह न कदा करै॥
मित्रता के करने से पहले, जिनकी ऐसी बुद्धि न हुई।
वे मूरख मित्रपने का हठ, क्यों करते जब यह शुद्धि नहीं॥
भानों ने कपटी मैंकुल से, मित्रता करी मुँह की खाई।
निज राज्य प्राण नृप खोकर के, इस तरह अकाल मृत्यु पाई॥
धर्म्म की आड़ ले मैंकुल ने, निज मित्र भानु नृप को मारा।
ऐलान किया शिव दर्शन हित, आते हम कुटुँब साथ सारा॥
मैंकुल का स्वागत करने को, कुछ गनी लोग सँग में लेकर।
पहुँचे नृप भानों मित्र पास, लावें प्रिय को आगे बढ़कर॥
मैंकुल स्वमित्र कहँ भुज पसार, जब मिलने दौड़े रवि नृप वर।
तब खल कुमित्र इस मैंकुल ने, असि के प्रहार काटा नृप सिर॥

इसके उपरान्त गोप्य सेना, मैंकुल की निकली सह सश्तर।
जिसने पुरमें प्रवेश करके, कर कत्ल दिया सबका वधकर॥
सूसावत मीना-पशि भानों, नृप ने या विधि अमेर खोई।
मीनेश की इच्छा प्रबल भ्रात, आखिर वे करें सोइ होई॥
कूर्मजाति मिनजातिमें, नहिं विशेष कछु भेद।
उभे विष्णु संतान हैं, फलतः हैं द्वौ—एक॥
कूरमवंशी भ्राताओं ने, निज पैर कुल्हाड़ी से काटे।
कट चुके पैर जब मूल सहित, अब चेत हुआ कुछ-२ जागे॥
यदि मिनवंशी कूरम वंशी, आपस में मिलजुल कर रहते।
मानते हुये रय्यत का सब, सुकृति शासक बन कर रहते॥
अपने पुरुषा श्री रामचंद्र, की नीति काम में जो लाते।
तो पश्चिम केर पिशाचन वश, पड़ देश के दुर्दिन नहिं आते॥
पाश्चात्य वधिक-वीणा के मृग, छत्तिस कुल छत्रि ललाम हुये।
धन-धर्म-सुतायें दे देकर, म्लेच्छों के पूर्ण गुलाम हुये॥
भोले मिन वंशी बलधारी, निज धर्म पै सब बलिदान हुये।
नहिं सुतायें व्याही म्लेच्छों को, धन राज्य गये प्रिय प्राण गये॥
भोलापन मदिरा अपना कर, मिनवंशि हीन हो दीन हुये।
छत्तिस कुल वाले कूर्मवंशि, कर भ्रातृ द्रोह अब हीन हुये॥
इनकी अनीति नागिन ने ही, इनको फुफकार मार खाया।
धीरे-धीरे उसके विष ने, इस समय असर कुछ कर पाया॥
नहिं भ्रातृ द्रोह आसन पाप, यह महापाप मनमें लेखो।
भ्राता-द्रोही रावण-वाली, की गति रामायण पढ़ देखो॥

द्वापर के दुर्योधन की भी, गति महाभारत बतलाएगा।
मिन-कूरम वंशी हैं अभिन्न, यह मीनपुराण बताएगा॥
कूरम वंशिन के मुख उज्ज्वल, करने वाले परताप नृपत।
मिन वंशिन के प्रातः स्मृणीय, वस्तुतः हैं बाधा राव नृपत॥

चौहान शिरोमणि नृप हमीर, अवतंस मीन कुल का सत्ता।
द्वौ वीरों की महिमा क्योंकर, वरणै मति कुंटित है वक्ता॥

★

मैंकुल की स्वार्थपरता तथा कपट पूर्ण प्रतिज्ञा कर मीन क्षत्रियों

※ से क्षमा याचना ※

मीने ही हमारे रक्षक हैं, मिन्क्षत्रि हमारे जननि जनक।
मिन्क्षत्रि हमारे अन्दाता, स्वामी भी हैं इसमें नहिं शक॥
कर जोर विनय मैंकुल करता, मुझको शासक मंजूर करो।
मैं निज करणी पर लज्जित हूँ, माफी दो मम अभिषेक करो॥
इस प्रकार कपट युक्तिकर कर, मीनों को बिन आई मारा।
इन कूरम वंशी क्षत्रिन् के, इस बल पर धिक् बारम्बारा॥
इनके पुरुषा श्री रामचन्द्र कहँ, त्यागि शेष रवि वंशिन पर।
कालिख का कलर सु चढ़ा दिया, भारी अनीति इनके कर कर॥
मीनेश विष्णुकेऽवतार थे, श्री रामचन्द्र जी असुरारी।
वेदों ने भी जिनको ईश्वर, माना शुभ कीरति विस्तारी॥

मीना क्षत्रिन की कछवाही, पांचवीं पाल कवियन गाई।
इसलिये वे प्रभु मीनों के भी, इसमें संदेह नहीं-भाई॥
मर्य्यादा पुरुषोत्तम वे प्रभु, कहलाये भुवर्लोक अन्दर।
श्रीरामाऽवतार सियादेवी, जिनकी शक्ती साध्वी सुन्दर॥
गुरुभक्ती जननि जनक भक्ती, भ्रातृस्नेह नृप की नीति।
श्रीरामने जगको सिखलाई,ढूँढ़ी न मिली कहुँ दुर्नीती॥

जंता हंता खल मार मार, पृथ्वी का भार उतार दिया।
द्विज क्षत्रिय-वैश्यरु अंत्यज सँग, समरूप भाव व्यवहार किया॥
अंत्यज निषाद-केवट शबरी, अपनाये रंच न छूत करी।
क्या कहूँ अधिक इन लोगों का, उच्छिष्ट भखा अति पूत हरी॥

उत्तम वशिष्ठ से ब्राह्मण भी, इस तरह पेश इनसे आये।
इनके द्वारा प्रदत्त भोजन, फल प्रेम सहित द्विज ने खाये।।
दंडक वन-द्विजँ कहँ अभयदान, दे प्रभु ने सोच विमुक्त किया।
द्विज रंक विभीषण कहँ हरि ने, लंका वैभव उत्सर्ग किया।।

भाई बेटों उमरावों को, नीती के भाषण दे दे कर।
समता का पाठ पढ़ायदिया, मर्यादापुरुषोत्तम रघुवर।।

वनियें-व्यौपारी कृषक वर्ग, सबके श्रीराम प्राणधन थे।
श्रीराम के प्राण उक्त जन थे, समभावी सब अभिन्न मन थे।।
ऐसा था वह श्री राम राज्य, जिसकी अबतलक प्रशंसा है।
इस युग के पाखंडी जन-नृप, उससे लेवें कुछ शिक्षा है।।
जातीय भेद झूठे बन्धन, विश्वास अंध कहँ तज करकै।
भारत वासी होवैं अभिन्न, और रहैं प्रेमसे मिलकर के।।
स्व-२ कर्मों को सतर्कता, पूर्वक सम्यक् संपन्न करैं।
मैं वर्हित हूँ यह गर्हित है, इस द्वेष भाव को भिन्न करैं।।
लाजिम हैं कूरम वंशिन कहँ, मिन वंशिन् कहँ न विलग समुझें।
पहले का जैसा भोलापन, अब मिनवंशिन में नहिं समझे।।
यह ठीक है बुधजन का कहना, सज्जन सुत खल हो जाता है।
अरु खल जन का सुत संगति पा, अति सज्जन देखा जाता है।।
श्रोतागण दीपक सुत जैसे, अति कृष्णवर्ण काला होता।
काले कीचड़ का वैसे ही, अति मृदुल कुँवर पङ्कज होता।।

* यथा *

सज्जनस्य सुतो दुष्टः दुष्टस्य सज्जनः सुतः।
दीपात्तु कज्जलोत्पतिः पङ्कात्तामरसं भवेत।।

श्री कूर्म वंश इस दीपक से, काला स्वरूप दूल्ह जन्मा।
कांकिल मैंकुल हूण रु कुंतल, पुनि राव पजोनादिक जन्मा।।

मर्यादा अपने पुरुषों की, इन महिपालों ने लोप दई।
धर्म्म की नाव अघ पूरित हो, सह सकीं भार नहिं डोब गई॥
वे कूर्म प्रभो इनको अनीति, का फल इनको आगे देंगे।
वे ही कोईऽवतार लेकर, इन पापिन कहँ शिक्षा देंगे॥
जो आज रसातल पहुँचे हैं, वे कभी नाँक को जावेंगे।
जो दरिद्र नारायण संप्रति, वे भूप कभी कहलावेंगे॥

मुकरगया मैंकुल नृपति, अपने प्रण से साफ।
मीना नृप गैटोर सँग, किया दगा पुनि धाप॥

गैटोर के नृप नाहर सिंह ने, मैंकुल से भीषण युद्ध किया।
रणतीरथ में नश्वर शरीर, आखिर नाहरसिंह त्याग गया॥
मीणों के शस्त्र प्रहारों से, मैंकुल जर्जरीभूत होकर।
पापों का बदला पाने हित, चल दिया धूर्त्त यमपुर रोकर॥

* दोहा *

मैंकुल स्वर्गवास पर, हूणदेव अस नाम।
मैंकुल सुत आमेर पति, हुआ शक्ति बलधाम॥

इस नृपने भी निज पुरखों की, अनरीति प्रथा जारी रक्खी।
मीनों के साथ कपट संयुत, शश्वतः काट मारी रक्खी॥
यह हूण देव नृप सामदाम, अरु दंड भेद चारों गुण का।
ज्ञाता था अच्छा पंडित था, समरांगण में भीषण रण का॥
मीनों में भेद करा इसने, मिन क्षत्रिन् की सेना द्वारा।
मीनों के कई राज्य छीने, मिनवंश काल भा हत्यारा॥
भांडार-विराट नगर सारा, पुनि मत्स्यप्रदेश विजय करकैं।
मीनों से रण अति घोर रचा, आखिर नृप हूण रहा मरकैं॥

हूणदेव के स्वर्ग में, जाने के पश्चात्।
कुंतल उनके पुत्र ही, भे अमेर के नाथ॥

कुंतल राजा राज्य का, लोभी हुआ विशेष।
पुरुषों की बाँधी हुई, लीक न राखी एक।।
दूल्हराय तक जानिये, कुंतल नृप पूर्वज्ज।
इससे आगे था बड़ा, कूर्म वंश अति पूज्ज्य।।

कश्यप से राम-सुवन कुश तक, रविकुल शरणागत रक्षक था।
दूल्ह से राव पजोनी तक, बिल्कुल निज शरण्य भक्षक भा।।
दूल्ह-कांकिल-मैंकुल प्रदत्त, मीना राजाओं के सब हक।
कुंतल लोभी ही ने छीने, मारण बीरों इसमें नहिं शक।।
सबसे पहले स्वाधीन खोह, गैटोरऽमेर नृप मीनों के।
राजसी चिन्ह सब छीन लिये, पद दलित किये सब मीनों के।।
मीनों की फौजें तोड़ दईं, उनके पदपर मिनद्वेषिन को।
कुंतल ने भर्ती किये यथा, बड़गूजर जाट अहीरन को।।
मोराँमानेर खँडार मीन, पुर-भड़ रजधानियाँ 'भड़' की थी।
इन शरणागत नृप पाचों की, दुरगति उस बिरियाँ ऐसी थी।।

* मीनाराजा श्री श्रवण सिंह *

श्री श्रवणसिंह मीनाराजा, भड़ भूपति कहँ धोखा देकर।
भड़वाड़ा प्रान्त सु छीन लिया, कुंतल ने कूट नीतियाँ कर।।
बारात-व्याज से कुंतल नृप, प्रविशे भड़ ग्राम के किल्ले में।
मीनाराजा श्री श्रवणसिंह, अस्तर्क रहा इस हीले में।।
कैसी बारात कैसा विवाह, कजवाः चौहान सु बंब बजा।
कर दीनी मार-काट जारी, नृप श्रवण सिंह की हुई कजा।।
इत्थम कुचक्र कर कुंतल ने, मीना भूपन के पंच नगर।
छीने अमनेर-मीनऽमरपुर, वैरोड़-खँडार और गनिपुर।।
कुंतले हुआ मिन छत्रिन की, प्रत्येक वस्तु से द्वेष जबर।
आमेर है मीना रजधानी, गुनि विलम बसाया कुंतलपुर।।

इसके पीछे संयमनी से, परवाना श्री अन्तक जी का।
आया जिससे हो गया शीघ्र, अवसान भूप कुंतल जी का ॥

* कूर्मवंशी रावपजोनी *

* दोहा *

कुंतल नृपके बाद में, हुए पजोनी राव।
इनके यवनों ने कई, दबा लिये जब गाँव ॥

यतनों के हमलों के द्वारा, जब राव पजौनी पजने लगे।
तब मीना सरदारों की ही, विनयी हो खुशामद करने लगे ॥
निज पिता पितामह के द्वारा, छीने हक वापिस मीनों को।
दे दिये छत्र चामर घोटा, किरणी छड़ि आदिक मीनों को ॥
अफसोस कई दुर्घटनायें, घट चुकीं मीन सरदारों पर।
तोभी भोलापन भ्रातृ भाव, नहिं तजा रहे निज कारों पर ॥

* दोहा *

कुंतल के अविचार सब, भूले मित्र सरदार।
रावपजोनी के बने, तुरत वीर गमख्वार ॥

मीना सरदारों का विचारनाः तथा रावपजोनी को
* हिम्मत बँधाना *

अच्छा है अथवा खोटा है, नृपरावपजौनी हिंदू है।
मिन वंशी हम कूरम कुल यह, आखिर में हमारा बंधू है ॥
भाई जैसा नहिं हितू कोई, भाई जैसा बैरी भो नहीं।
भाई रहस्य वे क्या जाने, जिनके है कोई भाई नहीं ॥
यदि यवनों द्वारा भाई की, इन आंखों आगे दुर्गति हो।
तो हम सब मारण क्षत्रिन् को, यह बात डूब मरने की हो ॥
श्रीराम-लषन से हितू भ्रात, नहिं बैरि विभीषण रावण से।
यह उभय भाँति भ्राता चरित्र, बस पढ़े हैं हम रामायण से ॥

भाई के लिये देश के प्रति, धर्म के लिये मारण क्षत्रिन् ।
सुत-कलत्र धन का मोह त्याग, कर दो निज प्राणों को अर्पन ॥
ऐसा विचार मीना राजा, केहरिसिंह-पीपासिंह-नरसिंह ।
बाहूसिंह कच्चरराय आदि, सैंकड़ों मीन क्षत्रिन् के संग ॥
नृप राव पजौनी से बोले, ऐ भ्रात नहीं अब घबरायें ।
जब तक हमरे तन प्राण रहैं, तब तक न यवन कुछ कर पायें ॥

* रावपजौनी का मीना नृपों से प्रशंसा युक्त कथन *

* दोहा *

कह नृप स्वागत आपका, धन्य मीन सर्दार ।
दृढ़प्रतिज्ञ तुम सदा से, बाँके समर जुझार ॥
कूर्म-मीन-दल सजि चला, भूप पजौनी राय ।
पुर कन्नोज समीप में, रोके मुस्लिम जाय ॥

यवनों का और क्षत्रियों का, यहाँ युद्ध हुआ अति भयकारी ।
ल्हाशों से पट मैदान गया, लाखों सामंत गये मारी ॥
यावनी सैन बहुसख्यक थीं, इसलिये क्षत्रि सब खेत रहे ।
आमेर पती भी सब के सह, कर वीरगती से हेत-रहे ॥
इस वीर पजौनी नृप ने भी, पुरखों की चाल रखी बेशक ।
सारे जीवन में पालनपुर, मीनानृप का बस छीना हक ॥
पुनि इसने कभी जनम भर तक, मिन वंशिन से न विरोध किया ।
मीनों को महती जागीरें, दीं उच्चपदों से युक्त किया ॥

* कूर्म वंशी मलैसीराव *

* दोहा *

मीनों ने इस भूप के, स्वर्ग बास उपरांत ।
वीर मलैसी को किया, पुर अमेर का कांत ॥

अपने अधिकारी मीनों से, यह पिता-समान पेश आया।
मैंनी अनीक द्वारा इसने, यवनों को हटा विजय पाया॥
पुनि मीनों की सेना लेकर, मांडू के मीना नरपति को।
रुत्राहि नाम के रण स्थल में, जीता और आप्त किया यश को॥
तदनंतर भूपति मलैसि जी, वस देव लोक को चले गये।
पुनि ग्यारह उत्तर अधिकारी, इनके अमेर में और हुए॥
ये हुए एक से इक अशक्त, यवनों का दल पुरजोर हुआ।
इनसे लड़कर चौहान-कूर्म, गुहलोत वंश कमजोर हुआ॥
जो बचे वे मीना क्षत्रिन में, मिल गये परस्पर एक हुये।
आमेर को रक्षैं सम्यक् विधि, मन सबके विमल विवेक हुये॥
बीजलजी-राजदेव कल्हण, कुंतल जोनसी रु उदयकरण।
नरसिंह भूप बनबीर और, पृथिराज-चंद्र अरु उद्दहरण।
पालन-पोषण जीना-मरना, इनका मिन् क्षत्रिन् के कर था।
मंत्री-मुत्सद्दी कोठारी, भंडारी सब मीना-कुल था॥

कोतवाल सेनापती, दुर्गप गोलन्दाज।
सभी पदोंपर उस समय, था यह मीन समाज॥

आमेर में कछवाहे कुल की, उन्नति का प्रथम काल जब था।
उस समय मत्स्यवंशी मीना, क्षत्रिन का सुनो हाल यह था॥
मीणों उस समय पूर्ण शिक्षित, तुम और तुम्हारी जात यह थी।
संप्रति जैसी जड़ताई अरु, जातीय भेद की बात न थी॥

* गाना *

अवगुण त्यागहु मारण वीर।
मारण क्षत्रिय-मैंना-मीना। जूना वासी ठाकुर मीना।
देशी राजपूत-मेवासी। मीनोता रु पुराणा वासी॥
कच्छप घात सुधीर॥ अवगुण त्यागहु मारण वीर ॥१॥

रावत अरु परदेशी क्षत्रिय । मीन-कूर्म सब मिलकर इक ह्वै ।
खानपान दुहिता व्यवहारा । करिये मिन कूरम मिल सारा ॥
क्षत्रिय सब बल वीर ॥ अवगुण त्यागहु मारण वीर ॥२
मौक्तिक शपथ आज यह गहिये । मीना हैं सब इक मुख कहिये ॥
मीनायण कहँ पढ़िये सुनिये । निज असलीयत पर चित धरिये ।
शिक्षित ह्वै रण धीर ॥ अवगुण त्यागहु मारण वीर ॥३

❊ रणथम्भोर का युद्ध ❊

❊ दोहा ❊

दशवीं सदि में एक ऋषि, पद्म २ कर नाम ।
पद्माला सर के निकट, जिनका आश्रम धाम ॥

अष्टाङ्ग योग के ज्ञाता मुनि, सब मुद्रा सम्यक् जानते थे ।
दशविध पवनों के साथ-२ षटचक्र भेद कर जानते थे ॥

❊ दोहा ❊

एक दिवस ज्ञानी मुनी, बैंठे चित्त सँभारि ।
कुंडलिनी चेताय कर, जा पहुँचे सहस्रारि ॥

लगगई समाधि अडिग मुनि की, नहिं बाह्य जगत का ज्ञान रहा ।
मैं कौन हूँ क्या हूँ कैसा हूँ, स्व-पर का कुछ नहिं भान रहा ॥
सब चित्त वृत्तियाँ खिच उनकी, मीनेश पिता में लीन हुईं ।
सौ कोटि सूर्य सम लख प्रकाश, अमृत सुखमें तल्लीन हुईं ॥
यह दशा देख स्वार्थी इंद्र, निज अपडर से थर्राय उठा ।
छीनेंगे मेरा इन्द्रासन, यह कर विचार सुर्राय उठा ॥
मुनिपद्म समाधि डिगाने को, वासव ने प्रेष उर्वशी दी ।
उसने पद्माश्रम् पर आकर, मुनिशांतिभङ्ग हित माया की ॥
ऋतुराज प्रगट करके उसने, कामोत्तेजक गाने गाये ।
पुनि धाकिट धुमकिट ताकिट तका किट तान नृत्य बहु दिखलाये ॥

आलापें मींड मुर्कियों सह, जब देव अङ्गना दे उट्ठी।
तब उनको सुन बाबाजी की, हो चित्त वृत्ति चंचल उट्ठी॥
यह मीठा-२ राग स्वाद, मुनि श्रवणपुटों से पिया जभी।
अज्ञान ने सात्त्विक बुद्धी को, आच्छादित पूरा किया जभी॥

तजि समाधि मुनिराज ने, खोले अपने नैन।
देखा इक मृगलोचनी, गाती यों करि सैन॥

*** देवांगना का गाना ***

वर गंध से सुगंधित, खा पान मुख रचाया।
अति पोढ़ पीनस्तनी, खंजनसे दृग सुहाया॥
हाथी सी चाल वाली, पिक के से बैन वाली।
कुसुमनकी माल वाली, मुख चंद्र सा सुहाया॥
सुगंधित तेल से तन, जिस वाम का परिवासित।
चंचल मृगलोचनी से, जिसने ना मन रमाया॥
हेमंत की निशियों में, जिसके पीवर वक्षों को।
मौक्तिक मर्दन किया ना, ते वादी जन्म पाया॥
वर गंध से सुगंधित, खा पान मुख रचाया।
अति केढ़ पीन स्तनी, खंजन से दृग सुहाया॥
परिचर अपने गोपि अब, रही अकेली नारि।
पद्मऋषी पर नयन शर, करने लगी प्रहार॥
हाथ पकड़ मुनिराज का, बोलीं उर्वशि बैन।
खाक छानने में मुनी, सुनो लाभ कछु है न॥

इससे अच्छा तो यह ही है, मुझसे शादी करलो भगवन्।
योग का तत्त्व सब देख लिया, अब जरा गृही का भी भगवन्॥

*** दोहा ***

सुन कर उर्वशि के वचन, मूढ़ भये मुनि ज्ञानि।
रमित भये उस नारि से, सबै सिसुता भानि॥

सोलह दिन मुनिसंग रह, नष्ट कर करा योग।
सतरहको यह नागरी, चलींगई सुरलोग ॥
व्याकुल हो मुनि ने यहाँ, यज्ञ वेदिका माँहि।
पाँच खंड निज अंगकृत, जला दिये शुक नाहि ॥

वे पाँच खंड मुनि ज्ञानी के, सत-रज-तम में परिणित होकर।
इस प्रकार भारत भूमी में, आये अवतारित हो हो कर ॥
मुनि पृष्ठस्थल से अघ स्वरूप, जन्मा अल्ला उद्दीन यवन।
ग्यारवीं सदी मुनि मस्तक से, हम्मीर वीर नृप जैत सुवन ॥
शोभनपुर में मैंना नृप घर, मुनि सव्यहाथ से महिमा का।
पुनि बायें करसे जन्म हुआ, रणधीर वीर वर गबरू का ॥
एवं नृप रामदेव के घर, मुनिके चरणों से चित्ररूपा।
जन्मी यह नगर देवगढ़ में, लावण्य रूप में अनउपमा ॥
मुनि आतम हत्या अघस्वरूप, अल्ला उद्दीन खिल्जि जो था।
क्षत्रिय नृप मिथः कूट ने ही, वस्तुतः किया दिल्लीपति था ॥

* दोहा *

यवनों के संसर्ग से, महिमा युत परिवार।
यवन धर्म्म दीक्षित हुआ, यह मारण सरदार ॥

मीना यह जीर्ण क्षत्रियों की, शाखा अति उत्तम टाड कहें।
बारह हैं पाल मीन कुल की, औ पक्ष-तीर-शत गोत्र अहै ॥
प्राचीन समय में जमुना से अजमेर तलक इनका शासन।
अब पाल प्रकाशन करता हूँ, सुनिये चित देकर सब मारन ॥

* दोहा *

प्रथम पाल चौहान है, दूसरि है परमार।
तृतीय पाल गहलोत है, चउथि चँदेल उदार ॥

पाल पंचमी कछावह, छठवीं यादव जान।
तँवर सातवीं, आठवीं, है पडिहार प्रमान॥
नवमीं निर्भाण गौड़ दशवीं, बड़ेगूजर एकादशवीं है।
बारह्वीं पाल सौलंकी है, ये द्वादश पाल व पदवी है॥
विद्वान तुम्हारी मूलोत्पति, भगवान् मीन से मानते हैं।
यमुना से ले अजमेर तलक, मैंनालय देश बखानते हैं॥
इस्लामी हो जाने पर भी, महिमा सच्चरित उदार हि था।
वह स्थूल रूप से इस्लामी, सूक्ष्मसे वह परमार हि था॥
क्षत्रिय समुचित शुभ गुण उसमें, सबके सब स्थान पा रहे थे।
इसके सौदर गबरू के भी, सब भाँति विचार उदारहि थे॥

※ दोहा ※

रामदेव नृप की सुता, चित्ररूपा जग जान।
बंधु द्वेय बल ते हरीं, शाह अधम यवनान॥
सबसे प्यारी यह चित्ररूपा, शह की थी पाटमहिष्या थी।
भार्या है रूपवती शत्रुः, किमि जाने यवन समस्या थी॥

※ चौपाई तुलसी कृ० रा० से उद्धृत ※

राखिय नारि हृदय जौ लाई। युवती-शास्त्र-नृपति वश नाहीं।

★

वेगम की प्रेम फाश में फँस, महिमा सिंह कामी हो बैठा।
परमार व मारण क्षत्रिय से, सांशक इस्लामी हो बैठा॥
महिमा गबरू का रणकौशल, दक्षिण के युद्ध माँहि लखकर।
दिल्लीपतिने प्रसन्न होकर, दोनों को किया फौज अफसर॥
एक समय ऋतुराजके, सूत्रपात में शाह।
वेगम सेनायुत गया, मृगयाहित बन माँह॥

रमणीक मनोहर से बनमें, दिल्लीपति का डेरा लगवा।
उमराव व भाई बेटों ने, हिंस्रक हित महिष दिये बँधवा॥
पुनि इतस्ततः हर्षित मन हो, दिल्लीपति मृगया करने लगा।
एवम् ऋतुराज ग्रीष्म सुतको, निज राज्य सौंपि तप हेतु चला॥
जब ग्रीष्म के धर्म से बनभूमी, उत्तापित खूब हो रही थी।
और शाह सहित सारी सेना, जब बन मृगयीय टोह में थी॥
इस समय चित्ररूपा बेगम, अपनी सब सखियों को लेकर।
जल क्रीड़ा की अभिलाषा से, पहुँची इक स्वच्छ सरोवर पर॥
विधिवश उस अवसर अक्समात्, झंझावायु का वेग बढ़ा।
नभ में धूली छा जाने से, नहिं हाथ पसारा सूझ पड़ा॥
अंधड़ युत वर्षा होने से, सबके सब तेरह तीन हुए।
सब निज-२ प्राण बचाने हित जहँ तहँ बन बिबर विलीन हुए॥
सुंदरी चित्ररूपा बेगम, अपनी सखियों से बिछुड़ गई।
भ्रमती-२ वह मृगनयनी, इकली निर्जन बन निकल गई॥
प्रथम वृष्ठि ते भीग्यो गाता। सर्दी ते तन अति थर्राता॥
अभि से हिंस्रक नाद भयंकर। मानुष कोउ न आव आँख तर॥
नयन मुंदे बेगम भय पायो। अक्समात महिमा तहँ आयो॥
शिविर माँहि लाने के हेता। अश्व चढ़ाई शाह दयीता॥
बेगम साधुवाद दे भाषी। धन्य वीर तें आतम राखी॥

* दोहा *

संप्रति मम तन शीत ते, बारबार कंपात।
महिमा तू मोंहि तुष्ट कर, आलिंगन ते तात्॥
महिमासिंह उत्तर दिया, सुन स्वामिनि धर ध्यान।
सौलंकी पडिहार अरु, पुनि परमार चौहान॥

अर्बुदगिरिपर ये चार वंश, मैंना जमिदारन दीक्षित कर।
मुनियों ने अग्नी होत्र द्वारा, उत्पन्न किये संस्कारित कर॥

इनमें परमार वंश का हूँ, मारण क्षत्रिय मैं कहलाता।
अपनी के सिवा अपर तिय को, मैं भगनी कहकर बतलाता॥
इक निज जननी दुसरी धाई, गुरु की स्त्री ब्राह्मण पत्नी।
स्वामी नारी गौ मातृभूमि, सुंदरि माता मातृ इतनी॥
कन्यादातारु अन्नदाता, विद्यादाता व शरण दाता।
उत्पादा और जेष्ठ भ्राता, सातवाँ पिता दीक्षा दाता॥
तुम हो दिल्लीपति की पत्नी, दिल्लीपति मेरे स्वामी हैं।
स्वामिनि सँग निंदनीय कृतकर, क्या बनूँ मैं यमपुर गामी है॥

* दोहा *

बेगम ने हँसकर कहा, यद्यपि है यह ठीक।
तद्यपि महिमा सिंह तेरा, नाईं बेतर तीब॥

निज मुख से रति माँगती हुई, तिय को रतिदान न देना भी।
तुम्हरे निगमागममें महिमा, इक भारी पाप बखाना जी॥
पुनि मैं थी हिंदू नृप कन्या, तुम्हरे भुजबल मम हरण हुआ।
मैं होती हिंदू नृप भोग्या यवनीय हुई धिक् अद्य न हुआ॥
हिंदू कन्या का हरण करा, पापी तू धर्म बघारता-है।
दे कामदान आया अवसर, रख नाक तू क्यों न विचारता है॥
मुझको दीन से अदीन किया, शुद्धा थी पतिता कर डाला।
इसलिये यवन तुम भी होकर, रहु गुप्तरूप उपपति आला॥

* दोहा *

महिमासिंह के ध्यान में, बैठा यह उपदेश।
उतरि तुरँगते महि उभे, लगे करन सुख ऐश॥
इतने में इक बाघ तहँ, गर्जत आया पास।
महिमासिंहने किया वह, एक बाण में नाश॥

चित्ररूपा बड़ अचरज माना। धन्य हिंदु नहिं यवन महाना॥

बस इसी समय से दोनों में, अति प्रेम बढ़गया नामी है।
बेगम के प्रेम पाश में फँस, यों बना महिम इस्लामी है।।
इत बड़े प्रेम से नायक ने, नायिका चढ़ाई घोड़े पर।
उत विरह चित्ररूपा के में, दिल्लीपति रहा रंज बहु कर।।
बेगम का पता लगाने को, सत्वर अनुचर पर्याप्त गये।
इनको महिमा बेगम दोनों, कुछ दूरी पर ही प्राप्त हुए।।

*** दोहा ***

बेगम कहँ उपलब्ध कर, अति प्रसंन भे शाह।
तजि मृगया निज कटकयुत, आये दिल्ली माँह।।
इक दिन दिल्ली नाथ गे, राजमहल में आशु।
कामाग्नी उपशांति हित, रूप विचित्रा पासु।।

रति बेला समय एक मूषक, निकला यवनाधिप विथक पड़ा।
पुनि एक बाण में वध उसको, बेगम दिशि लख शह विहँस पड़ा।।
शह बोला रूपविचित्रा से, देखा मम रणकौशल प्यारी।
बेगम ने कहा धिक्क इसपर, आपको हुई शेखी भारी।।
इस अवसर पर कितनेक वीर, एक हो बाण में केहरि को।
वध करके नहिं अभिमान करैं, रण कौशल में उनके सरि को ?।।
शह बोला ओह सिंह को क्या, बेगम बोली जी हां साहब।
ऐसे बलवीर की बलिहारी, आश्चर्य मुझे बतलाओ तब।।
ऐसा रणधीर वीर मेरा, चाहे कितना अपराधी हो।
जागीर के साथ-२ उसको, उस कसूर की भी माफी हो।।

*** दोहा ***

बेगम हो बेगम कहा, वन मृगया का हाल।
आँखें अंगारा हुई, शह की सुन तत्काल।।

बोला तुझको तो माफी दी, मारूँगा महिमा जालिम को।
जिंदा छोड़ूँ नहिं किसी तरह, बध कर धोऊँ इस कालिम को॥
अपने इस अज्ञान पर, पछताई वह जाय।
मेरा इसमें दोष है, महिमा का नहिं हाय ! ॥

* विचित्र रूपा कर जोर कर बादशाह से बोली *

प्रतिकार में उस नर पुंगव को, यदि अता-सजा की है इच्छा।
तो उसके पहले मुझको ही, मरवा देना होगा अच्छा॥
यह होगा क्या अन्याय नहीं, निरपराध नर फाँसी पावैं।
और अपराधी को जहँपनाह, कर प्यार आपने गर लावैं॥
क्रोधित हो कहा यवनपति ने, चल हट बस हराम जादी है।
महिमा को बुलवाने के लिये, इक भेज दिया संवादी है॥
सेनापति महिमासिंह पास, अनुचर बोला फिलहाल चलो।
दिल्लीपति के तिरछे तेवर, इसलिये उचित कर ख्याल चलो॥
समझ गया महिमा तुरत, बेगम वाली बात।
भागे दिल्ली से निकल, स्वजन सहित अधरात॥
पहले रजधानी शोभनपुर, आये पुनि प्रांतेतर भागे।
ऐसा नृप वीर न एक मिला, जो महिमा की गुहार लागे॥
एवं हताश भ्रमता फिरता, महिमा हमीर नृप ढ़िग आया।
चौहान शिरोमणि नृप हमीर, हा त्राहि ! त्राहि !! कीजै दाया॥
मतवाला इक गज पांच अश्व, मुल्तानी दो कमान सुंदर।
इक चंद्रहास दो दिव्यवाण, मुक्तामणि अपर दुकूलंबर॥
ये नजर रावजी के करके, पुनि कहा ध्यान धर सुन लीजै।
मैं बैरी दिल्लीपति का हूँ, इसलिये शरण्य शरण दीजै॥
जौं मेरी रक्षा करने की, शक्ती तुममें नहिं हो राजन्।
तब दस्ती हुक्म शीघ्र दीजै, संकोच त्याग कर हे राजन्॥

तन मन धन देकर रखौं, किमि होवै हैरान।
वीर राव हम्मीर ने, किया अभय महिमान॥
पुनि हर्षित हम्मीर ने, निज गल पदिक सु हार।
शरणागत के गले में, दिया प्रेम से–डार॥

पुनि पाँच लाख की जागीरी, पट्टा करके महिमा को दी।
और महा अभेद्य दुर्ग ही में, उसको रहने की आज्ञा की॥
शरणागत महिमासिंह से पुनि, नृप ने यह वक्ति प्रकाशन की।
मेरे जीते इँदपथ जैसे, परवाह न कर सौ शाहन की॥
ज्यों रघुपति सुकंठ अपनायो। त्यों महिमा हमीर मन भायो॥
इत अभिसे रक्षित हो महिमा, रणथंभदुर्ग जब वास किया।
उत गुप्तचरों ने दिल्ली में, तब जा सब हाल प्रकाश किया॥

※ सोरठा ※

सुनि अनुचर ते हाल, यवनाधिप क्रोधित हुआ।
पद कुचलित जनु व्याल, बारबार फुपकारहीं॥

※ दोहा ※

भेजा रणथंम्भोर को, दूत हाथ संदेश।
सभामध्य तव दूत आ, बोला सुन नरपेश॥

बोला अनुचर चौहान वंश अवतंस प्रतापि हमीर नृपत।
इक छिछलो पुष्करणी के हित, रतनागर सागर काहे तजत॥
राजन् इक काँच कणिक के हित, तुम मुधा अमूल्य सुरत्न तजो।
सुरभी-पय-राज्यरमा तजकर, नृप दुग्ध हेतु महिमाँक भजो॥

※ दोहा ※

कुटुँब हेतु एकहि तजो, ग्राम हेतु इक गेह।
देश हेतु इक पुर तजो, विद्वज्जन मत एह॥

कह हमीर अनुचर सुनो, यद्यपि है यह ठीक।
तद्यपि शरणागत विषय, यह सब कथन अलीक॥
शरणागत रक्षण यवनों का, मुमकिन हो चाहे कर्म्म नहीं।
आश्वासन दे विश्वास घात, करना क्षत्रिन् का धर्म्म नहीं॥
कहदो तुम जाकर खिल्जी से, हम्मीर शपथ पूर्वक कहता।
इस्लामी हो जाने पर भी, महिमा को यह नहिं दे सक्ता॥

* दोहा *

नृप हमीर संदेश चर, कह्यो शाह पै जाय।
अकनि तुरत यवनाधिपति, पुनि संदेश पठाय॥
परिहरि हठ हम्मीर नृप, चौर हमारा देह।
जनि दिल्ली के धीश ते सन्मुख लोहा लेहु॥
धन माल मुलक चाहो जितना, दिल्लीपति से नृप ले लीजै।
महिमासिंह चोर हमारे को, हिय सोच समझ कर दे दीजै॥
रणथंभनाथ ने उत्तर में, इस प्रकार एक आँक लिखदी।
प्रण जाय नहीं, बरुजाँय प्राण, लिख चिट्ठी तुरत विदा करदी॥

पढ़कर नृपसंदेश को, हृदय हुआ अति दाह।
मंत्रीगण की सलाह से, पुनि चर भेजा शाह॥
दिल्लीपति का तीसरा, बाँचि राव फरमान।
उत्तरमें क्यों मुहुमुहु, लिखता तजौं न बान॥

* जोधराज जो कविकृत दोहा *

पश्चिम सूरज उग्गवै, उलटो गंगा नीर।
कही दूत आ शाह सो, हठ न तजै हम्मीर॥
लाचार हो दिल्लीपति बोला, अच्छा प्रभुता हम्मीर कहो।
है कितना दल और बल उसका, हे दूत होय गंभीर कहो॥

शतपंचतु गज मस्त हैं, सत्तर सहस तुरंग ।
रथ अपि पैदल लक्ष द्वै, भूप अनी चतुरंग ॥

इकतीस हजार तुरी शिक्षित, मदमतवाले अस्सी हाथी ।
दस हजार पदचर सैनिक गण, रणधीर राव के हैं साथी ॥
रणथंभनाथके औरस से, आशा में रतनसिंह आदिक ।
पितु समगुणवान पुत्र हैं द्वै, कन्या इक चंद्रकला नामक ॥

जौं इतने दलबल सहित, रण हमीर चित लाहिं ।
सबल शत्रु पदतर करैं, यामें संसय नाहिं ॥

एवं निज अनुचर के मुखसे, हम्मीर असीमशक्ति को सुन ।
दिल्लीपति उर थर्राय उठा, बाहर से कहा बोर अति बन ॥
हम्मीर तेरा मगरूर सर्व, मैं पल भर ही में हर लूंगा ।
खूनी महिमा को बाँध पकड़, दिल्ली लाकर फाँसी दूंगा ॥

* रोला छन्द जोधराज कृत *

क्याहमीर मगरूर पलक में पाँय लगाऊँ ।
खूनी महिमाशाह उसे गहि दिल्ली लाऊँ ॥
जीति राव हम्मीर, तोरि गढ़ धूरि मिलाऊँ ।
एती जो नहि करूँ तो नहि पतसाह कहाऊँ ॥

कितो राज रणथंभ को इतो कियो अभिमान तेहि ।
कोपि शाह भेजे जबैं दशों देश फमीन जेहि ॥

यह सुनकर महरभखाँ मंत्री, बोला दिल्ली के नाथ सुनो ।
इस विचार पहले पृथ्वीराज, चौहान वोर की शक्ति गुनो ॥
गोरी गजनी पतिकी गद्दी, सतबार छीनकर लौटा दी ।
हम्मीर उन्हीं का वंशतन्तु, बलवीर धीर अरु संतवादी ।
गीदड़ की और केहरी की, तुम मृगया एक नहीं मानों ।
रणधीर-हमीर वीर से तुम, मानों-२ रण मत ठानों ।

एक न मानी शाह ने, भेजदिये फर्मान ।
मिश्रदेश कंधार अरु, रूम-श्याम-खुरसान ॥
ईराँ-तूराँ-कटक से, काबुल और कश्मीर ।
बलख-रुहंग-फिरंग से, आये अगणित वीर ॥

हिंदू क्षत्रिय भूप बहु, आये यवन सहाय ।
भारतीय नृप फूट लखि, हर्षित मुस्लिम राय ॥

हिंदू नृप दल था सातलाख, यवनों का बीस लाख कुल था ।
अष्टादश लाख अन्य परिकर, एवं पैंतालिस लख दल था ॥
उसमें थे पाँच लाख घोड़े, अरु पाँच सहस्त्र वर हाथी थे ।
रणथम्भदुर्ग के नाशन हित, और भी शाह के साथी थे ॥
ऋषि लाख क्षत्रियों को तादम, चौहान-खून के प्यासे लख ।
विद्वान यवनपति कहँ अपार, आनंद उस काल था बेशक ॥
वह मनही मन यों कहता था, हिंदू सम मुर्खा जाति कहीं ।
दीपक लेकर यदि ढ़ूढ़ें तो, मुमकिन उपलब्धी होय नहीं ॥
हम भी कहते है हिंदुओं में, यदि मिथः विरोध नहीं होता ।
तो भारत इतर देशियों से, दुर्गति को प्राप्त नहीं होता ॥

★

※ तर्ज तुलसी कृत ※

दिल्ली पति लै कटक अपारा । आयो देश-हमीर मझारा ॥
प्रथम कीन्ह मेवात विध्वंसा । कोलाहल तहँ मच्यो गरिसा ॥
बरबस हिंदू यवन बनाये । धर्म्म हेतु कई प्राण गवाँये ॥

※ मीनाराजा सत्का जी पाकल ※

मेव देश को बीर नराटा । गयो देश जीतन बैराटा ॥
नाम भूप को सत्का पाकल । भूप बिना जंता सब व्याकुल ॥
कायर क्षत्रिय बनगये यवना । वीर धरम हित सुरपति भवना ॥

किहुँ प्रकार खबरि सुन पाई। मेव देश विपत्ति अधिकाई ॥
यह सुनि सक्का आतुर धायो। शाह फौज में लूट मचायो ॥
लुटी रात ही रात में, शह की रिद्धि अपार।
तब दिल्लीपति सों कहै, मंत्री बारहि बार ॥
हजरत देश हमीर को, निपट अटपटो जानि।
भिल्लकोल तस्कर बसैं, यहाँ रहे अति हानि ॥

★

सक्का नृपने दिल्लीपति को, चर द्वारा साफ चुनोती दी।
यदि ब बस हिंदुन को मुस्लिम, करने कि यहाँ जो मस्ती की ॥
तो यथा फौज को लूटा है, वैसे लूँ लूट देहली को।
महिमा को क्षण में छीनि देउँ, तुव बेगम शाह मरेठी को ॥
सक्का की धमकी से डर कर, दिल्लीपति व्हाँ से निकल गया।
हिंदू को यवन न करने का, प्रण भी उसने बस कर ही लिया ॥
भूपति सक्का धन्य तोहि, रक्खा मान मेवात।
तव अनुपस्थिति में बने, यवन करोड़ सु सात ॥
मेव देश ते निकल कर, मल्लहारणा शहर।
लूटा यवनाधिपति ने, चला न कीन्ही गहरू ॥
मैंना रावत पदवी वाला, था दुर्ग पति मल्लारने का।
पैंतालिस लक्ष शाह दल को, हौंसला न हुआ वारने का ॥
रावत क्षत्रिय ते सुना, मलारने का हाल।
क्रोध विवश हम्मीर नृप, सका न देह सभाल ॥
परमार अभयसिंह-भूरसिंह राठौर-हरीसिंह वाघेला।
अजमतसिंह शिहरा वीर और, चौहान वंश का सादेला ॥
इन पाँचो ही रणधीरों को, भेजा शह से करने को हठ।
तिन बीस सहस्त्र मीनों को लै, शह को रोका वनास के तट ॥

मारण क्षत्रिय सब हर हर कह, टूटे यवनों की सेना पर।
सहसकों मारि नहिं यवन धारि, परिहर रणखेत भगी सत्वर।
मारण छत्रिनने रण अंदर, शहके हनि सार्द्ध शतम घोड़े।
सैनिक गण तीस हजार वधे, उमराव अमीर वधे थोड़े॥
हम्मीर के सव्वा सौ सैनिक, दश सरदारों युत खेत रहे।
इनमें अजमत सिंह शीहीरा, मुखिया था मारण चेत रहे॥
शीहरा पुरातन छत्रिन् को, इक शाखा मारण वीर सुनो।
माँची इनकी रजधानी थी, अजमतसिंह माची भूप गुनो॥
मांची की वर्त्तमान संज्ञा, जयपुर में नगर रामगढ है।
जेतारन के अविचारों से, शीहराऽपि निम्न स्तर पर है॥
शीहरा चंद्रवंशी चाँदा, क्षत्रिन का वंश तंतु इक है।
था परम उदार रावमेदा, नृप इसो वंश अंतः इक है॥
सागरमें फँसे पोत बेड़े, नृपवर के नाम मात्र से ही।
डूबते हुये उतराते थे, इस नृप प्रति प्रथित बात ए ही॥
स्वारथी और विश्वासघात, करने वाले कछवाहों ने।
परिवार सहित कर नष्ट दिया, शीहरा वंश कछवाहों ने॥
शीहरा वंश में अब कोई, ऐसा नर पानोदार नहीं।
बिगड़ी को बहुरि बनालेवे, ऐसा कोइ हिम्मत दार नहीं॥

यवनाधिप ने निज कटक, बनास नदी ते हटाय।
दर्रे के अभिमुख रखा, भाग अनेक बनाय॥

यावनी फौज में द्वौलख तो, हिंदु वनिये व्यापारी थे।
पुनि एक लाख सौलह हजार, इस्लामी ठेकेदारी थे॥
थे चार लक्ष वर सूपकार, इतने ही बेलदार मानों।
द्वौ लक्ष कपट में घौंसी थे, श्रुति लक्ष पाहरू थे जानों॥
इक सहस्त्र चिकित्सक सेना में, मरहम पट्टी करने वाले।
इतने ही हरकारे गुनिये, पत्री-चिट्टी देने वाले।